

क्रमांक २९४७

विषय: पुराण ७ १४

दिनांक

नाम सत्यापारपत्र (पूर्वार्द्ध) १० १४

प्रकार

पृ. सं. १-२४, २६-५७, १-३२।

लोक सं.

अक्षर सं. (पंक्तौ) ४९ पंक्ति सं. (पृष्ठे) १६

आकार: ६.४.

लिपि: द. ना.

आधार: का.

वि. विवरणम् ३५.

सं. १० १४

पी० एम्० यू० पी०-९९ एम्० पी०-१४५१-५९००

अल्ल राम सरिताम वल्लभ

14420

अ. प्री. ६.



स. पा.
५॥

धना

तयानीतायुहुरम्यमनरोनम्यपुः ॥ इत्येकेकवरातततमायप्रति ॥ ३॥

५६

राज
राम

—

तं वा.
१५

मि-का येमहातेजोमशोमनिसनमः॥ आरजगममुनिभोरोवाकस्वपशयणः॥ तं प्रणम्य गुनिसेवप्रभुः पुरवादि
नः॥ इदमेवममाभागाः श्रीमदुःष्टद्विधनाः॥ ॥ लोकोमेउवाच॥ ॥ कथं योप्यामिलोकोमंधराचरितमेहताः यच्छु
वादिमतेयुधितमनाहरेयुवा॥ देवामै प्रबरोमाशुहादयस्तुतवली॥ नाम्नाविगतंनोरेहो लो प्रक्षप्यः सुतेतिगः
तस्मैयमंधराकन्यापुत्रवित्नातनागरा॥ तत्रापि मंजरोनामैसकन्यापराशुभतः॥ विरोचनस्तंभगीनाप्रक्षप्याध
मवलिताः॥ राज्यजरादेवातीतेनदेवातिलोनाताः॥ हतश्रियादिशरातेराश्याकाव्यशरंगताः॥ वरस्थितिमुने
प्रज्यमनुवन्नात्मनेहितम्॥ ॥ देवाउवाच॥ ॥ वरोपायेमहापुत्रुदेवतस्यामरेदिवम्॥ विरोचनेनसेवनेरा
पुंसकेमकंदकारा॥ त्वेयान्तायपतेत्या॥ ॥ विनस्तामं कर्षनेनकिम्॥ ॥ मरुतउवाच॥ ॥ मोक्षपायमहापुत्र
देवाश्रितिवरः॥ ॥ सुभुजोवाच॥ ॥ कृताप्रयोजुदेवामरेदिवम्॥ कुर्वतुयाच॥ ॥ वीः तोम्यपाक्यमोहयुवा
देवंपरमधनंरतिचैतेमेव॥ ॥ वीः॥ यदिरानेप्रतिशोचकुहतेदेवसंनमः॥ तंस्माभानतनामोपशुचयदेव्या
मनिसरा॥ मरुस्थितमहातेजः॥ ॥ देवदेवनेनतस्य॥ विरिष्ठशुभरादेवादेवराजैसमायुः॥ कृत्वाब्राह्मणव
कश्रितिसकाशिनराया॥ विरोचनस्तंभगीनावादेवामुममनामना॥ वल्लभपुत्रभरादेवामुद्रजनामासेममति
तः॥ अग्रप्रदक्षिणमनाया॥ ब्राह्मणः॥ सितिरिभती॥ ॥ वीः॥ शितंभुधमंहा॥ किमर्थमेवरागतो॥ देवाउवाच॥ पराका
यसयाभंगोपुष्पाणाविदुमतिप॥ कलिनृचयथादक्षमयिकाश्रयपतामगः॥ दानिनेह्यजितुंभवतममका
नुका॥ ॥ तमेवतोयमैरापेयिरियाश्यायितुम्॥ ॥ विरोचनउवाच॥ ॥ याचन्ममरा॥ ॥ कामदेवमह
नामना॥ भूतयाः परकायानवनामनिसुमुमु॥ देवाणांयुगलविनवरत्नानीनमना॥ ॥ जलानीवच
मैधानीममनेवदंयथा॥ ॥ दूषणमममदीदे॥ ॥ सहाजलिना॥ ॥ कीर्तिहृद्यकोमैश्यामतीनमना
हताः॥ ॥ लोमशउवाच॥ ॥ कृपानवराहः॥ तत्कलविनवरत्नरुपिणः॥ देवंपरमधनंरतिचैतेमेव
देवाउवाच॥ ॥ आपुरदिसरायराजतामसोवाचि॥ ॥ वचनंमुसमाकण्ठेदेवानोक्तामस्यवाचि॥ जहा

६१

तोचंमहादेवाः प्रसन्नास्वमवतीता॥ एतेनोकासमेतवश्रायप्रामेधनेनकस्य॥ आश्रितमानुषदेवोपकारयक
ते॥ नकुताविमलेवाचतेमकिंनराजः॥ देवसोचधर्मात्मासर्वेषांपरपतिमोः॥ वरुचपदेमकंदेवनामो
सहयहता॥ हाहाचंचकोकेषु कर्मदेवस्थप्रेषताया॥ प्रसंसातिभ्याः कर्मदेवोनामरितिरियया॥ आदेतेया
श्वतेसवैश्वकींदेवपुत्ररा॥ विरिधंभेतिरेतेपुंनपरेतोवेषचने॥ परमानंदमापनास्तिहिवेशाममरा॥
देवानाचक्रोकोमतेरायत्परकलः॥ समेताः संवृष्टाः प्रोचुः॥ नानायापेकरास्थिताः॥ ३०॥ अहोदेवामहो
ना॥ अस्माकंनरां॥ ॥ छयेनात्माकेपायस्यहताः॥ माणयसिपतेः॥ किमुमोहिवयं॥ कस्यराजंवेमहो
मरा॥ ॥ लोमशउवाच॥ ॥ सतस्मिन्मतेदेवोकासमसुरादेवपराका॥ कृतोविरोचनस्यासीत्परांरातवकिम
॥ ॥ देवाचंदेवसहातेमगा॥ भोदेवसहा॥ ॥ मंधरोवाच॥ ॥ अहंरहाकरिप्यामिमुक्तामंकात्मविमंया॥
चरतुनिभमातोकाहरेननायिदेवोकासा॥ ॥ लोमशउवाच॥ ॥ शोकमंधरमाकाव्येनशम्यतुजाम
ना॥ तुष्टुमुदितास्तोतुवासेः॥ सतस्मिन्मते॥ ॥ अनेपरमवक्तुश्रोतादपकयया॥ मन्वाथसवरोकागो
वतिदेवोवत्तया॥ ॥ वयशोवःशुक्रिरायेचक्षिपरासिनः॥ योतोमाः कालिकेयाश्राव्यमहाप्रामहावत्स
दादोम्युर्जमंतिरातोदुष्टवेतसः॥ यमाताहनुपुत्रवैश्यापयचकाशपपाः॥ अरयोः कोपकृमियाताः॥ अकंता
मवैरुमि॥ मिहरेवरेदनामताः॥ पतिभिर्नयुः॥ ॥ द्यामकावरायतंश्रयशवातेवचराभवः॥ अयेगता
मरावः॥ सेनायोधनोभारिणः॥ ४०॥ देवानोचनमुभोगोवीक्ष्यभक्तिमतातः॥ देवदामोमहापुत्रिनीश्यामे
नकाशेताः॥ कथंयामोचंनरासहस्रयंयशरुतम्॥ देवरातोमहातेजिदामनाशायता॥ ॥ यथातेदेव
सहातोवत्तवदिदेवताः॥ देवरातेनेचाज्ञादेवाः॥ तवेवनिर्णयः॥ अभारोचनः॥ यतिदेवानासम्यतोमुने
केतकेःशोभमानोश्वकंपक्षनामैथवायुमि॥ गजराजसमाहस्यवजपाताः॥ रादिरहा॥ उदचानिवदेव

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

योगा

१५ उवाच सततमहाबुधैः ॥ १६ तावत् कथा श्रीरघुनाथस्य
 कालिकसुखहारीणी धन्याया ध्यायुरी श्रेष्ठा धन्यो राजा महायशः यस्य
 पुनत्त्वमापन्नः परमात्मा सुनातनः यस्य लीला मयं विश्वं ब्रह्माद्यावत्
 सांगताः सोषितीला वपुर्धत्वा चिकीडि धितुरङ्गः यशो यस्य प्रगायंति
 १३ नारदा मन्त्रयः द्विभारं वन्द्यते चाहा सा भूतपुराणां सतत उवाच
 शृणु तौ नरकं कृत्वा मिथो पापप्रणाशिनी एकद्वारघुनाथो सो धितुरङ्गे
 समाहितः कोराव्या धारा नाराः मुखोऽङ्गुलं नतल्लराः उतीर्ष्व रागचन्द्रे
 विधितुरङ्गात्समृद्धीः अंगणे लीलाया पातभरता दीनमहा मन्त्राः वत्तपु
 ष्पः कृत्रिमेवैषा पुरीमः सुमनाः ॥ १७ ॥ कोरोपकुर्ये रवेरमया सा सदा
 लकीनं वातानीलो प्रकृषणिः सर्वेषां प्रीतिमाधुः ताताः कीडा निरी
 क्ष्या धराजा मुदितमानसः प्रसादो मत्त्वमाग्यं स मे मानिभिरुक्तानसः अं
 गशोपं च कुत ते कचिद्विदुः ॥ १८ ॥ धावेच्चवालिवा हाभ्यां गमनं कुत ते न
 जेः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ १९ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २० ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २१ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २२ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २३ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २४ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २५ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २६ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २७ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २८ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ २९ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३० ॥

तथा राजा धन्यो

न भयात्नस्य सती हतिस्वरः ॥ १ ॥ कोराव्या धन्याः सर्वे जनायुः
 येना मेक गतो भाति वा वक्रः परमेस्वरः न कीर्तितो हरिर्देवि चिन्तितो मन्त्रानय
 सुधाश्च सति ते ये ध्यायि विनं भाति बजिर्न धिग्जन्म तेषां च नृणां येन बाराधे
 तो हरिः कृतं च नैव सत्संगो नातोऽपि परमेस्वरः येन सति प्राप्तिर्दिनेन रूपव
 द्भूतमिदं तेनोपपन्नं बतं भाग्यं वंशे त्रेकः सति प्राप्तिर्दिनेन रूपव
 कोराव्या राजभाषिणी यदेन मेकमारोप्य रासुं चेति निलराः यतो मुक्तिज
 मुरव्यो ये राहुतो मेन क्रोदिभिः तयाति कहिचिः साक्षात्स एवास्याः सुतो भवतु
 योगिभिश्चिपते नित्यम प्रमत्तैर्जितो द्वियैः अंतर्मना सना वातिस एवास्याः
 सुतो भवतु बहवः पुण्यकृतरिः सुतेष्ट कृतं कृष्यः अनेकमालिचियैः शुभक
 विधिवतिनिः विः कोऽनुं न शक्नोति स्व रूपभूतमीश्वरं तदवास्याः पुत्रभा
 वं प्राप्नोत्या भाग्यं मुजुतं राजा विरुत पुण्यश्च सुतेष्ट मद्रो द्रुत भाति मुक्तो
 ल्परा मस्य सह पश्यति तसुखं पत्न्याः सा केतविः पत्न्याः ये पश्यंति स्वतः पिना
 रामं च तद्यशो निर्यगायति धनुरायतः सा केतवा सिना मेवा भाग्यं को वणि
 जुं क्षमाः एवं सुतेष्टैः सर्वे त्रिसुखं प्राप्नुवन्तु राजाः वणिक्त्वा बहु विधे परमानं
 दनिदृताः एवंपरात्मा रामो विभो तमिः परिवारितः रेमेतोऽनु कृतिभिः
 कीर्तयिः परमेस्वरः इति सः सो पारव्याने चतुर्धियाः सतत उवाच अथाभ्य
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३१ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३२ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३३ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३४ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३५ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३६ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३७ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३८ ॥
 तत राहोमः धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ३९ ॥ धावेच्चवालिवा रत्नते कचिद्विदुः ॥ ४० ॥

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

स. ग. पा. नं
२५ ६

लक्ष्मीपुत्रादयः
 श्रीमद्भक्तानाम्
 वगैर्युक्तानाम्
 लक्ष्मीपुत्रादयः
 तत्त्वः

μ₂²

म. पा.
२. ॥

वीरः उति का त्रुणा का करामन्य वरणावकी। त्वया सं प्रणिता रागे अरुणा पविश वाहः यशसे तवै का क
 धारा मे व्यभिजितं रुद्रा। रा म त वा विषया ये ए दं न व न ह्वा गा। दिव्य शो ना वयं र वि सु द से ना द वा हि जा।
 हरेराम स्य ल व नामा म्यार्थ न वि प्रते। अहा नी पत्नी का क वि द उरु क शा व र्वा। रा म त्वं म रा उरु ज ग त क
 यशसे त व। इति लो का वरि म्या का को हा ना म रा भि। अ शाने व न ह स्य व लो मे नै व ह्वा ग म्॥ ६०॥
 प शक्त न म भो का क लो के पु प्रसी र ध्याते। रा न ह नै पु र्वा हि स्ता ने प्रा ते क उ त भ म्। गु मुं सु उ वा वा
 पु र्यं द र्दि म का ध्य रा म म्भ व र ण व का। भ वि ध्य ति व ने भा गं प रा त्वं हा ग नि ध्य ति। ह ना यो ह त्ता अ
 ई वा द म्भ श न्ति का श प पा। आ म्भ र्श न म या द व हा नं पा त व क र र्वा। रा म स्य व र णो ज न्म रा नि व म
 रा न ते। म र्त्त उ वा वा। नि हा अ व स का क ल्प रा म व न न व र्वा हि। अ भुं क्त उ वा वा। भो श्री रा म म रा
 भा रा भि क्ते ई हि नि श्र मा म्। अ ने न वा त र प ण स रा म ह र्ते व स। मा या ते प न ला रा न य या मो ह व
 रो म व म्। य यो न न ह्ये दं त मा मे त्वा वि परि भा। स धा र त व म्भ रा ग स रा मो म ह व ध्य वा। त था
 कु ल ख ना के दे व श ना थ न्म व न तः प्र भा। य रा त्ता रा पु र्यं पु त न्म र्त्त मे नु मा त वे। स त्प पु न र्म वि
 ने व त स्मा त्वं गे श्वा र्थ्ये। म र्त्त उ वा वा। व ष्ट का क र प्रा र्थि ता रा म भो मूर्त्त मे द वा गि रा। भ क्त स्य मो
 हि ता भ त्प त्ता त्था न न वि लो क्त्वा। श्री रा म उ वा वा। प था व र ण मो जा क त तं थ प भा न ध्य ति। उ प दे श्वा ते
 त्वं हा नं ग त्ता य म रा त्ते। ७०॥ मा य धा त व यो। भ वि ध्य ति क र व न। आ श्र म त व मा या न म भा र्त्त व
 रि ध्य ति। ह द य न म र्त्त न नि व र्त्त ध्य ति त ल। भ क्त ना न व न स ग त्ता भ वि ध्या त न म श या। ल तं तो

प. त. ल. त. नि. श्र. व. ज. वि. वि.
 ना. ब्र. मु. र्ध. ण. ल. म. त. य. न. मे. वा. ७०
 ७०

पि ध्यति मा न व ल वि व ल्प ना। ते वा व ल क ता म्भ का मा र्त्त व र शो व न स ग या। भ न क म् प र्थे ध्य त्ते क र्त्त व म् क
 म न म्भ धी। अ व र्त्त व म ते पु त्र म्भ ध्यो प न रा म ते। श्री म र्त्त उ वा वा। व र द त्वा त रा रा म ल त्ते वा ते र्ध न्म व म्
 वि स र्ज ति क्त्वा रा म प क्षि रा द नि नि र्धो। गु मुं सु गो पि नि ल्प ता मे प्रा प त प र धि तं॥ आ म मा यः स रा रा
 वा ल रा प ण मी र व र्वा। गु मुं सु श्र वि श्व वि रा म र श न ला स। प र प त ल्क त रा रा म व र्त्त व म्भ धी व
 वा ल क्ता रा म या न्म व र्ग ति। मु नि त त्ता। अ ना क वि प्र व ष्ठा नि वा ल क्ता रा म र शो व न ह रा म्। ७१॥
 श्री लो का म्भ्या ने म्भ र शो न क स ए दि प र्ति रा ति त नो म्भ्या म्। ७२॥ श्री म र्त्त उ वा वा। क रा वि श्र म न् व र
 वा ल र्पा नु कौ तु र्वा। व का र व वि धी का जो आ ह णो मो र ना य वा। ७३॥ रा म्भो म रा णि भ्यो रि ग मा नो
 व त ल तः॥ मा त रः व र्त्त व म्भ्याः प्र ल वं सः ल ना त यः॥ आ व ना न ल्प म्भ्या व का त र क्षा य र्त्त व। कौ तु ल म र्त्त व
 क्ता त था श म्भो हि र ण म य र्त्त। वा ल क्ता रा म क र्त्त व र्त्त व म्भ्याः प र श्वे त्वा पि य त ल तः॥ मे रि र प्र मा न र्त्त व र्त्त व क र
 मिः॥ वे दि का ल्प ते रा वा ता र्त्त आ र मिः म र्ति ता मु क्तः॥ र र श रा म्भु जा ति म्भः प त ना न्ने व वे ग तः॥ रा म व र्त्त व म्भो
 श म्भो वा त्ते न वि स ते म्भु मु क्तः॥ रा म स्य र शि गे वा नु णि ना य सु भा मि ना। मा त र चा णि म मा ते अ म्भ र्त्त व र
 वा ल सः॥ का र व ल्प उ रा व किं के णो प र प दः॥ ए व भ त र वा नु मु ल्प म्भ्या र श म्भ मा त रः॥ वा ल प र्ति ल्प म्भ्या
 को श या धा ल्प मा त रः॥ को श या पि म रा रा र रा नं वो क्ति नै व श व। ल्प वं स वा ल्प रा मा त्म नु म्भ्या व
 तं त ती। कं व क्तु र्त्त व वा ल्प क र्त्त व क्ता ल म प भा म्। वं भू क ल द र शि जि ह्वा मो ह म्भ र तं नि म्भ्या। क मा ते

६३

स. पा.
२२॥

वनहृदि प्रावेदं नोऽसममना ॥ चित्तुं कालं प्रायनामि को मु कनाति काश् ॥ तिल कुं द ग न म स्य वी द्य मा ते
मु द्रां चिता ॥ वा पं वं व स र स्य व ता द शं द कुरी द्य म् ॥ आ वृ त म ल क र स्य गे य स त मं गि शो क कः ॥ रा म स्य तुं
न न नी नि रा श्य वु वं व म य्या किल को ह्यं व म् ॥ पुनः पुनः सा व रं वि लो क्य कं द स्य को ग मि ली त स्म वा ल
म् ॥ श्री रा म वे द स्य नि रा श्य शो भो न था द गे नो ट व ति स्म मा ता ॥ का र्छि य रा म म वा ल क मू र्खं वि चारे म न
सा च का र ॥ को रा म्या म्ब न रा नां सै व ह्य तः किल वं क रा ॥ रा मं वं क वि धा वा यि ला ल या ना म प्र व तः ॥ भ र त
मा ना त रा य भ र त ना ज ग म ह ॥ कृ मि ना त न प ना यो प्रा वि न्त ग मि नी ॥ अ था श्व त व श त शो रा न रा राः
मा य युः ॥ अ न्या श्व ता त क त रा रा स र स्य अ ने क राः ॥ न रं श्व रं मृ ता मा गः को रा यो भु व नं शु भं ॥ को र यो
मा म रा रा वं प रं वृ म्ब स्य र न ग ॥ रा मं क र वि द्वा न भ र तं द र्भ णं कृ चि व् ॥ श नु म् व त थो रा ना ला ल या
मा न कोः ॥ तो म्भ रं काल तु गंधं वि श्वा व क र ति म्भु तः ॥ आ ज ग न नि ज न्म मि रं तः प र वं भू प ते ॥
२०॥ मू प ना कां त ल त्र ना य आ ग म ने ग ह ॥ ग जा नं व ह्म यि वा तु त थो रा ही र ने क राः ॥ ग हा म ना जि त स्मा
थ ते ना ज तः न्ति ता हि सः ॥ वि श्वा व क र ते वा य ॥ मृ ग य रा न शो र ल वा अ ने गो ग ग र वा ह ॥ श्वि र व
द वं ध नं ब न्ध त स्मा दि र वा प क र त व र ॥ अ रं ग मेः स्य को ये म क स क रं तो ष र्थं व ता न ॥ इ मु को वा र यो ना
त म हं ग र म र ता र को वा ॥ वं शो र को श्व मु खि रा द्वा ग रा र्छि तं वि का शः ॥ ता का दि का र द्वा न्धो व त थो र
धा न नं क र ॥ स्व वं तु वा र यो मा स मु ख र प रि वा हि नी र ॥ अ स र स न न न तुः मं गे त ल म मा ग ताः ॥

कं ७ ज

ना र क म्भ ग बं वि र ह्वा री नां च भू भु वा म् ॥ मो हि ता क र त रा म वं ता सो गा न व ने त ना ॥ ग ता र श र ओ ग ही
रा ता र स्य श्व वा ल को ॥ अ न्या श्व ता त क त रा योः प ति णः प रा व ल था ॥ जं ग मा जं ग मा वा ना जं ग मा जं ग मा
म था ॥ क रं पं जं र स्य यः वा ला ते षा ग ता य ते तु ता ॥ ना श ई स्य र वे गे न - का श्वा ने प्र ति ग र्हि त र ॥ वा
रा रा श र यो य वे मो हि ता गा न पा व तं ॥ मा तु रं का त स मु यो य ष रं ध र्म क ल मा न ह र ॥ गा ने स्य लो नु
गं ध र्म वि श्वा च क्त र्म रा त यो ॥ रा ल था मा स वा लो श्व मा ग्यं म त्वा धि कं ल क श ॥ न रा द य क र त रा य
रा द य स्य मु रं व मु ॥ उ वृ षः प ल्म रं को का ग त मा रा स्य गी र्वा रा ॥ वा ला ना गी प को र द ये पा र्म प क र यो ॥ ना
त र क्त त मा स र्दि सा द्वा शो अ न्यो वृ व र ॥ अ ना ग ह नु र उ ना गं ध र्म वां का श्व वे ग त ॥ स त्मं ध यं तु गो वा
रा वि श्वा व क र त ग ह्नु ॥ र व मा को ता श्वा पि न - वा ज स ल मा त र ॥ पु नः पु न क त ल यं वा को ना क ल वा
ल को ना ॥ त रा तु ना त र था य वि स्य यं न मु क ल्क का ॥ ग ता र श र थ श्वा पि न रा ल वे र्मं च र शः ॥ स त
उ वा य ॥ को श्वा मा र ज न न री कृ मि ना र द र्भ ण व लः ॥ गं ध र्म भू व तुः म्भ्या वा ल को ना क र यो वा ॥ को श
यो ना मि भो ह्यं व तु ॥ अ ने व ति क ग ध र व वा न को ना क र यो वा ॥ मा जि तः प्र ति तु क्तं व ल्म ना पि न यं
श्मा ने ॥ वि श्वा व क र त वा य ॥ इ व रा न स्य वा यो ग वे गं न वं यं क यो जि ता ॥ आ शो वि ना न त ल्प व त व
गे र व शो मा त ॥ त मा ये अ उ व रं व ह्वा ग नि क्का म ह ॥ भू व र ॥ को श यो वा य ॥ द र नी ग म्भ ता
व ने द्वा पु ने रा व ज ॥ ४०॥ वा ल को ना मु खार्थः ॥ रं क लो न नि व ध्यो ता ॥ के क यी व त रा श्व वा गं ध

[illegible]

सर्वथा

[illegible]

—वा

Indira Gandhi National
Centre for the Arts

म. पा.
३

रिद्धमहेय तेषां आहोमो मुनिना राजा गंधर्वसु पाहय ॥ स्तब्धयो वलिकातस्य बाग तस्य वितो कय
 वपत रा तु नरस्येरा ना वाते को वीक्ष्य सवती ॥ गंधर्वा विन ना ना गत रा मय चारि तत्त्व रम् ॥ इत्येवं वदत
 सत्यमुनेना श्रुत्वा निचो ॥ न पत्या न कटो वा ता वत इति गतो ततः ॥ स्मिन्ना भव नैतो न पथा भ
 ति सः पुनः ॥ वशिष्ठे न पुः ॥ गोः ॥ दद्या मा या त्व वा न वः ॥ युथा वया मिता इतथा कुत वे च न म म ॥ मेव च न कुत
 रा मस्तु तस्म ये ना पितु र्ना कोऽनु मरिद ॥ भरतः ॥ रिपु र्ता न पायतु ॥ शानु रारतः ॥ न कदा भ्रम
 त्वे व त वरा न भविष्यति ॥ ७० ॥ स्तुत वा वः ॥ सु न व वि त मा क ष्य तथा स्थिति न या प्र वीर्यः ॥ इव
 उद्दिश्य राजा ने ज मा मुनि उः ॥ वाः ॥ गते पुः ॥ त रा रा मा क न प त्वानि ऊ न पु नः ॥ आह या मा त
 ता त्प को रा था य च ति कः ॥ वध्या मित्त रा वे रा ता न ता तु भा मि ना ॥ तु मि नो वी च ॥ आ
 गता म्मि रा रा न स मा हा मु त्म म ह ॥ वृति ना रा य णः ॥ शा शा न वा हा म म म ह ॥ रा तो वा
 च ॥ को रा यो मो ग रा रा मा त्स्म ये न त कोऽनु ॥ तथे व श नु ॥ ब भर त सो न कोऽनु ॥ यो
 या न ना य ते ग ध र्वा क ता म न ॥ क ता म ना वा वः ॥ इव न पुः ॥ भू ता न वा त को म म त यो नु गो
 उ का व वं तु म ॥ नु म वि वे श त्स्म य द ॥ नित्य नि य तु यो थि ॥ मा तः का ने तु मा ग धा ॥ त स्म
 रा रा म ता नि य श नु भू भ र त म ॥ श्रे य यो त म रा म रा मु नि ना प ति र व ता ॥ रा म स्तु त स्म
 या ना वि भर तः श नु धा ता ना ॥ वि वि का मु रा तु का ज न ता न र आ र को ॥ इ वं मु च म नु त यो

मोहो

रा. ३
३१

शक्तिः

तु वा त का ना व भ व र ॥ इतः परं रा म स्म ना न चारि च म नु त म ॥ वर्ण या म म हा पु ण्वे श्रो तृ ग मा म
 मो च न म ॥ १ ॥ शो आ ल त्वा पा र था ॥ स्तु त शो न क तं यो द द्या वि शो ध्या य ॥ २ ॥ स्तु त वा च
 गा त रा यो रा ज नु री र रा ज न यो ना ॥ रा म नो क वि या म ह ॥ स्म म क र्ण वि ग्र ह ॥ पा द्या पा द क र्ण द्या ने
 ना ग रु द र ॥ स्व र्ण म र्ण म धि तो म य म क र्ण द्यो र का र ॥ क र यो वृ त्ति यो र त्म र्ण जि वि रा त त म ॥ अ नु र
 यु का म भू र्ण र त वि नि मि त म ॥ क र्ण को र का र यो ना र्ण र त्म न क र्णि ता म ॥ तथा पि न वं क र्णो
 च ने न परि स्तु त म ॥ ग ज तु क्को च ना थ पा क र्ण योः कु ड लु क म ॥ अ नु र का व तं वं क र्णि द ना चो ज न स्य च ॥
 इ र श वा त क वा के ल वा रा ना च त ति वा र ॥ वा म र्ण वि य मा न त्व ज ने कः ॥ क ति प र्ये द ति ॥ र त्ना त्का व
 र का वि त्म स्य वि र वु वं वि न ॥ अ नु र त्म तो र्ण क र्णि च रा तो क र्णो र क त म ॥ द द्या द द्या पु न द द्या मो हि
 ता ता व भ व र ॥ वि स स्म र त रा वा ते र र्ण र्ण र्ण र्ण र ॥ पा ता मा र्णि यो तु र्ण र्ण र्ण र ॥ परि वा रि ता ॥ मु र्ण
 का वा रा मु नि म रा रु पु ता ग र ॥ म न ने वी म मा ना पि त था ले म वे त रा म ॥ यु था क र्ण वि त्ता ना ला वा
 धि ता वी डि ता भ व र ॥ १० ॥ स र्वी म्भो व र्ण न ने व वं क र मा म्भ क र व र ॥ प र्ये क श य न वं क र म्भ का ना न
 ज यं त था ॥ म्भ्या य तो र्ण र्ण र्ण र ॥ मो क र्ण मा वि शो र ॥ य रा मो म मो क तु त्व य मा ग त्प र्ण अ ति ॥ अ
 नु भु ने त रा न र्ण को र्ण र्ण र्ण र ॥ म्भ्या य तो र्ण र्ण र म्भ र व र व र्णि ति ॥ प र्ये क प ति ता र्ण र्ण र ॥
 ता क रु र वि ता त्म प्ता प ति क ता म्भ वे वी र र्णि तो र वृ त म ॥ वि कि र्णो का र मा मा ल ना र्ण र ॥ प र मा र्ण र
 उ र वि ता यो च त त्म्यो वे रा ता र र्ण र ॥ मा र्ण र व पु न र्ण र ॥ को र्ण र्ण र म प र्य र ॥ को र्ण र्ण र म प र्य
 म्भ त ज मा म नो र त म ॥ उ र र्ण र क ता मा ल को र्ण र्ण र म्भ र व र ॥ गो म्भ गोर वा ज्ये व त था तं व र्ण

हृदये



[illegible]

न. क्ष. व. ल. ध. रा. पु. भौ. ॥ ह. र्म्यं गुरवे दत्त्वा राजानं प्रापतुः पुनः

राज्ञा न भानि हो नौ च

ਸਦਾ ੨

न तांस्थाय ३ वा ॥ धर्मो युक्तो मरुता गोकुलं प्रति कौशलम् ॥ इदं गान्धर्वकुले तातात्वे पौराणिके त्वे दशोः ॥ जगदायमा मा
त्मानं दत्त्वा इति विनये ॥ जगत्सु नैव मे साक्षात् कृतं युवाभ्यामुत्तमं कृतं तत् ॥ ४० ॥ माधवी कुंता हन्ति ॥ इव गन्धर्वतादता ॥ ४१ ॥
स्य तां गम्यते तत्र माविद्धं वक्तुं कीयताम् ॥ तथैति तस्मिन् योयं कृत्वा जगत्सु गच्छति ॥ ४२ ॥ गौरव पश्यते त्रैलोक्यं ॥ नाकं पितृ ताम
हं ॥ तत्र त्रैलोक्यं तावदायमायमस्मात् ॥ नारायणस्तु विष्णुस्तु ब्रह्मास्तु त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ ४३ ॥ एवमायं तु
गौरव ॥ तत्र त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ चर्कतुर्गन्धर्वस्यैव सा तां गतां पठति ॥ प्रजहन् अथोपस्थितः ॥ सैव त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं
वम् ॥ विनिवार्यतः सर्वं दृष्टि तैस्तैश्च रजिताम् ॥ आश्रयं तु दरेः प्राप्य सुदितं तैश्च रजिताम् ॥ उच्यते तां त्रैलोक्यं
वषट्पुत्रं वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ तथैति नृत्तं तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ दत्तं वक्तुं तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
कायकेशवकुटीरो गमसंन्यूनमावसो ॥ त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ दत्तं वक्तुं तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
तुकोहंतं पञ्चावसा ॥ कृतं त्रैलोक्यं ॥ बाष्पतु त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ दत्तं वक्तुं तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
गन्धर्वतां तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ ४० ॥ दत्तं वक्तुं तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
परमं दुष्करम् ॥ तावत्संश्रितं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ उच्यते त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
तमठवाच ॥ दत्तं वक्तुं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ दत्तं वक्तुं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
कुंठं कायस्थः पुरमादुत्तर ॥ यै प्राप्य न निवर्तते ॥ नारायणस्य सुखं त्रैलोक्यं ॥ इत्युक्त्वा तु गतां त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
दिशम् ॥ तां त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ ४१ ॥ उच्यते त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥
र्जितां तैश्च त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं त्रैलोक्यं ॥ अनेनेति वदो ह्येति ॥ पुनर्भव विध्यति ॥ इत्युक्त्वा च पुनः स्वर्गं उच्यते ॥ भागीनि

त पा
(३५)

श्वेतुलभिरुक्तैः केमस्माकं ह भविष्यति ॥ इति श्रीमत्सनानां देवेभ्यः पापशमयः ॥ निर्गतमस्मिन्
श्वेतुलभसुपस्थिताः ॥ १० ॥ नैव वस्त्राणां स्यात्संस्था विनिमनासिका ॥ तेषां वृणत वीणासंस्था
रक्तविरोक्ता ॥ हस्तनरहिताः केचित्संस्थाः केचन वीरिताः ॥ नेत्ररिनामस्या केचित्कुशाः ॥
पासका पराः ॥ अथ करा मेषा बाये कृष्टिनास्य परेतमा ॥ नावा वेषधराश्चास्य पावीनो विधराः ॥
उद्यता मुभरिदः सत्पापाः सन्मुख गताः ॥ अथोष्णानि मरुवा वीर्यस्थाना नातया गुणाः ॥ ता
डिता योष्यसास वंगदया नमिर्वगया ॥ परावन पराः सर्वे पुरस्तुभ्यान्तस्मिन् ॥ तस्मै चरित्तुस
त्पापाः सप्तसाध्वस्य बलका ॥ रुदतो मेरुव नारवेन लोका विनिमिस्मिन् ॥ पुण्या वाका रिनाश्चोराः
स्वर्गद्वारं समापयुः ॥ यस्यातिशोगाश्चोरा नखीमान् पुनासिका ॥ ज्वालाय सूर्यदिया तस्य
स्वर्गनेतृगताः ॥ क्रीता केश राभ चंद्रस्य नमः ॥ मेरुगता ॥ पापमुक्ता सप्तवर्षे वषट्पुत्र
पिनः ॥ तस्मिन् काले तु चाहो विचगुताय मेन वै ॥ कर्णपोला वगुण्य वीराणां कृतवर्तय ॥
संयमन उवाच ॥ पस्पता मे पराः स्तुत्यन्मथा येन ते सुखं ॥ पुनाः ॥ २० ॥ क्रीयतामवेता वा
ध्वजोराणां पापना तैव ॥ केयणा पापं के कृत्य पात तमना मितम् ॥ विक्लाभा पुरा सत्पा
तस्यानासा ध्यमीदृशम् ॥ पापमुक्ता स्तुतेम वै वषट्पुत्रोरा सत्पा पराः ॥ मुमुक्षु वस्तु केचित्
ध्यामुमुपासते ॥ कृती ते स्य वक्तुं कृत्वा मलिनो वाच भवतुः ॥ गतः परेश्वराणां वा वक्तुं
तुल्यतोले पा ॥ विजयता वक्तुः ॥ सर्व भवतु मीका लुह घणाः ॥ पुरातन वपुः ॥ जन्ममय
व्यस्यु वरि पापानि योति वै ॥ पापिनस्तु गनि ध्याते साकं तस्य नमनि ॥ २५ ॥ गत पाप भव

रामः

ते

यंतिकलिकाले तु पावराः ॥ स्तुत उवाच ॥ सर्व विधास्य तस्योष्ट्रविषवर्षे नो जेतो ॥ ममार्जतुर्ल
पिशाङ्गो वृण पापसंभवा न ॥ इति श्रीमत्पापारख्याने स्तुतशोच कुंवादि चतुस्त्रिंशत्पापाः ॥
तृतीयोऽध्यायेन प्रेषिताः ॥ तः पर्वति सरासितो ॥ पुण्याः परिश्रमस्तु ॥ ददुः पापविधराः ॥ यमदत्ता कुः
केयुषं पण्ये स्मिताः ॥ त्वरा कपरा यणाः ॥ किं कर्तुं मध्वता युयुषं पण्ये कुत्र वा सिनः ॥ पापविधरा
कुक् ॥ मरुकोता र्गो सत्पापाः पापिभिः प्रतिपालिताः ॥ मातृपितरं त्यक्त्वा मर्त्यादी वरसंभवा म ॥ अ
स्मिन् प्रतिमं युक्तामस्त्रं धर्मं प्रतिपालिताः ॥ ते वर्य पाणिर्मं येन सा केते प्रात चागताः ॥ ताडिता
श्च वषट्पुत्रं पुण्या विमलं गम्य या ॥ देहं त्यक्त्वा जेतो त इति वृत्रघ्ने मीरः ॥ नवमां चेलं मानस्युक्ता
साद्य प्रवर्तते ॥ तस्या जतमभावेन सरं कृत्वा ततः पुनः ॥ इति पापविधराः ॥ नवमां चेलं मानस्युक्ता
नात ॥ नास्ते ता न केला के विमाने जवते गताः ॥ ते पापविधराः ॥ त्वं नमिना पापमनेन वा
वेरुभा लिता विषधर्मं त्यक्त्वा मरुत्पिभिः ॥ ते परिश्रम्य वा म्मा केला के सातिकां गताः ॥
मित्रे संगवि पागेन दुःखिता ध्याने संस्थिताः ॥ स्तुत उवाच ॥ मनोवक्तुं पापानां तदनां
संवर्धन ॥ १० ॥ अत्रुववचनं कुरुं पापं पण्ये सते यः ॥ यमदत्ता कुः ॥ सप्तयुक्तं करिष्यामि
पुष्पाकिं जने न न ॥ कायं विधु देवमा कृता चाता यमस्येना ॥ ईदृशी विमलं न ॥ इति
पापिनो जगति मराः ॥ भवतिः स्तुत यो का जत्रो वदु भायमं प्रति ॥ स्तुत उवाच ॥ भवतिः ॥ इति

न. पा.
31

प. न. त.।

कास्यमनी तदुपमहतात्वेनान्विताः। यमनिवेदयानाकः पापानां दुःखमववाच। यमउवाच। विमला
 पाश्चात्यास्यं शुक्रानां ध्यामधोक्त्या। यत्तेन हायने हते न हि मां चक्रपाणिनः। यमउवाच। ज
 मरुतेनैकमात्राभ्यं वक्रं स कोन बाहुत। पापकोटिमसायुक्तं चेतनं चमिकिति जा। पा
 कोटिनरत्नपत्का जमममकः मरुताः। मासाति परमं लोके मन्त्रगत्वा नराचत। यमनो
 यत्ससलावेतस्यैकं कुत ते यमः। भवतां दुःखं बुद्धिं तु यातां वं विहसं प्रति। क्षामनाथं वयं तस्या
 गमिष्यामि घृमा विदुः। सतः उवाच। इत्युक्त्वा यमराजापि भूतप्रेतगणैर्हृतः। आरुह्य गहि
 र्वेगात्सत्यो प्रति जगाम ह। साकेतं नगरे दद्याद्विभक्तं न विदित्विराह। यमरो जे न
 मश्च कृत्वयागम्यते पुनः। रथा न वमो वं घृते बाधुतो त्यक्तो कुनया त्यसि। विश्व
 कर्मो जाय। आगम्यते तु साकेतात्मा साश्वासं स्रजं जये। दशनं तं मरुमक
 देवैः साहस्रतं मया। ब्रह्मणा युजवाहतागमिष्येते पृथुवम्। तत्र गन्वा च वेदमान
 रुदिष्योनि गमयि। नेवमीति नो तत्र मरुत्वापि नो पुनः। जगाम बोति वेगेन
 यमविश्राभ्युत्कारणम्। निशम्य तं मरुवाद्वातं यममत्वा वेति स्मिरः। जगाम यमन
 जो विस्मिता कतजगरो हवे म। मासाभ्युत्वा वयं मरुत्वात् तमसा मुददशिरा २५॥

गम
३२

याप्र

महिषं च परित्यज्य ननामुवे च तो जालेः। आरोमणवृक्षाय विमलायेतुमध्यतः॥
 न मे श्वातेतं सुखं ज्यमैसा येन मुहुरतः। सोचधावद्वेगेन यमउवाच। यो मरुत्सु तय॥
 गोप्रतापे शिरसां स्यात्ततः एव तु कंठके म। तदेतुला सरसा सा स्यात्। कृति ६०॥
 अमर्षात्परा बाण्या मेघनादगमिरया॥ यमराज उवाच॥ अयोध्या येन मले
 क्तगम मत्तेन नो न म॥ आद्यायेतु न नक्तभ्यं सत्या येतु नो न मः॥ सरस्वा वै कि
 ता ये वन गोमातस्तमो मरा॥ ३०॥ ब्रह्माद्वारितमातं यमिभिः पश्यं कसि ता। राम
 भक्तप्रिये रोहि तव हाते न मो न मः॥ ये ध्यायंति मरा सा को मन सा त्वा हि हृजिता। ते
 धोन रयंति पा पाकि ध्या त को पाजिता विव॥ अकारो वा क्त ह्यः स्या धकारस्त
 मजा पतिः॥ उकारो ह्यः सुक्त ता र ध्यायंति मुनी श्वराः॥ सूर्यवंशो ह्यवाको तु
 राज्ञो परम धर्मिण म॥ ते वा ता मा त्वा ध्यायंति तु तया कृति नो मपि॥ न जानंति
 महि नो तं तव हाते मुनी श्वराः॥ कमुं तु जायते ह ते मरी ये बुद्धि वज्रि तेः॥ न मलो
 क्तमहादेवि सहा हा वन मो न मः॥ न मो यो ध्ये न मो यो ध्ये पाप न क्षम पा कृता। स
 न उवाच॥ कृते वं विदिरा माख न्ये उ मो मरा मनाः॥ अयोध्या देशं या मा तं तु न वा
 नुत्थ प्रतिपद्य॥ वृदिता यमराजेन सत्या पाहयं न विदुः। मया वाच॥ वरुहि मस्तु
 दु पाहं तु न मे शय॥ यत्थं वागतो सि वं ते न मा यं च भण्य मा॥ यमराज उवाच॥



प्रमत्ता मयि मातश्चैहृदम्भानवकंठकः॥ चार्योऽस्मिन् गौधेयु पापरात्रिपि प्यले॥ ते यो
 मोक्षोपायानां कथ्यन्ते तेषां पुनः॥ मम हृता पराध्वं क्षयतो हरि रजिते॥ ४०॥ श्रीअथो
 प्योवाच॥ यमस्यास्य विविख्यातेऽस्मान्ते सारजतये॥ कृतं कालिषिते पक्षे द्वितीयाभातु
 येयना॥ येन्यास्यति नराः मर्वते पापयममर्षे नदि॥ पावितिष्ठाति पापाति योराणां च
 पि प्यले॥ विद्वये पातुभोदवममवाक्यान्वाचिने॥ ममेदमद्यमकलयाभाम्पाचय
 कृतम्॥ यः परायातेन्यास पापमयं तस्य गणेशपति॥ प्राप्नोति मकलान्मन्त्रमया हतीन्
 रुधुभोद॥ कृत उवाच॥ विश्रायवचनेन त्याग्य मौत रथे प्ययम्॥ तेन स्तुति तदा च केवाशि
 ष्यापुनिनभुनौ॥ चित्रगुप्ता च ते हता ललिताश्चाभवन्मुहुः॥ विग्रहास्मगता नारी पापा
 नोऽक्षणा नरा॥ आतापि यमुना पाकस्त्राने ललापुरंगतः॥ मारा व्यविमनायास्मकं रते
 मः श्रावयन्॥ श्रीअथ कृत उवाच॥ मारा व्यमोदरा तुभं मया ते वैदुर्वापितम्॥ जन्म
 नेरयोऽपाना न वम्याश्च सुतीरवण॥ मुहूर्धन पापानि यमश्चापि परिहर्तुं येतौ॥ मुक्ता
 च विमुना नृभोगास्तु न ते जायिगतिर्न भवेत्॥ कृत उवाच॥ अगम्येन पुरा मोक्षं कृतीरणा
 यवशा न क॥ अरुक्त्वा स्मृतीरणा नृभोगा यमुना वृद्धम्॥ नराशयमवकथयन्तु प
 ङ्काय पापिने॥ निरकायगुराणां च वेदोक्तं तथैव हि॥ निरकायवपुः पाना नो ते
 पाप कथमेव कथितम्॥ ब्रह्माच्छुद्धावते वैवर्णिकश्चैव योऽपि पापाम्॥ विष्णुमका

श्री

राम

४०

वैष्णवमुपाहृतसत्तमः॥ परमेश्वरं वास्यं गपवन्तं दारयाम्॥ ४१॥ इति श्रीतमोपाख्यातस्तुतशेनक
 तवाहं केतादृशागमस्यसंवादे श्रीभगवत्पद्मोपाख्यातस्तुतशेनक
 मराजुदेव्यतिमरुमतिमवाच॥ हृदये मम येदम्यमक्तानां भक्तिवदनम्॥ हता ललाटे तदा वक्ष्ये
 कथं रक्षा यमः॥ ओतुं यतीं स्तुतिर्ये मादरादिमप्यस्य॥ अविष्टि नेमवेतं मथोत्तमैव तं मनःक
 तं यमायण भूतितातायाश्च तमुक्तुः॥ तस्मिन्नेति मयोपेव विवदरा मास्तु मुहुः॥ विहारोऽनं वद
 न्यासेन मया कृतम्॥ विद्याया आत्मतायाप्युद्वेतेना च भूयते॥ विनोऽभूत्परां क्तातीर्त्तौ को
 दाहकृतं कर्म॥ वैपुलेन वाचोपेव भूयते नृवासेय॥ अन्वर्षं तेना नो को मा मं मुहुला मना॥ यो
 वने वनवासे तु काकी॥ सेतोऽस्तीनामना॥ मना पावनपीडाया मागो ह्योप्यमुमुता॥ रा मो नासयणः
 तासां रथेव नित्या वेत्त तम्॥ वदु पात उराण पुकृत मीता तं मया॥ माक्षु पुनं नरिनामस्य यवाका
 पि अतो हित॥ ललाटे ललाटे च स्वमाधुर्विवेकादिकम्॥ ४२॥ कृत उवाच॥ मवोदराय रिको म
 विक्रुतु स पेसुताम्॥ कृतं प्रश्नं तवाथ कृतं मया कथ्यते मुना॥ ४३॥ जिह्वं ध्यायेनो विष्णुकोत
 नार्थन कोतयेत्॥ ललापि नास्ति श्रेष्ठं तं तवासे तं मुनिः॥ तेना नृपविष्णुमिवास्ति दिवं पर
 मात्मनः॥ आत्मा रोवि श्रीरा मः कदापि न जगतां प्रभुः॥ वक्ष्या मातस्यैव मुनिवो रानंदकारकम्॥
 विनोऽप्येव तदा वैवर्णना नो हं कृतया॥ दृष्ट्वा यं नृदाको बदि तं वदोः पातः॥ अमुमुता मया
 वैवर्णना तने मयुता तया॥ तेना त्वेव श्वरातीराणां कर्त्तामिच्छति मनाम्॥ जन्मनेव नासुराशो

[illegible][illegible]

मर्षाणां कंच केसया । ततो नो ते तु भित्तु लुत्तया गलैः समावृत्ता । तत्र च द्वाते होरा नो बालकानि दमम्वदी
ह । श्रीरा म उवाच । किमेव बालका वृत्तवर्णाः । वनरा कृतेषु । इत्युक्त्वा बालकैः साहज्या मनेन क
द्रेमसु । करेण स्पशन्नेव केसिका आनी च पशुपता । समद्विजमाने प्रादुराहो वसवसः । पितृना
वृधेः स्मरदी मुकुटदी कृत्वा लक्षितः । दध्निशं यकं काले तुलुसा राम मंडितः । अंगद वृत्तया
वृत्तया चो विराजितः । पाश प कतरा म स्पृष्टशम म्नील पानदी । श्रीरा म उवाच । ब्रह्म
महा उदेका न घ्यात्मने ममा । कस्मैव लोकां पृणवतीति सजितः । अस्मां अवेष्टाया
लं बहूनां परिमं त्वा । पुन उवाच । किं तां परिमं त्वां वंसा म महिमा च । धनुर्वा
रविमं त्वां परिमं त्वा । सका मृगशथानी पशुशो गच प्रादुवन् । पला यमानो लिख
अप्येव विप्रमं तां । योजनानां त्रयी । शोचयमानां त्रयः । परिमं त्वां तोह वदिनी ते पति
तः पति । आनं गुह्यं तां । सा ध्वः पवर्षशातः । हृषया म्मव वसवगम्याः मंग ते पुनः ।
आमंगला । वसन्त सतो रजिष पशिया । प्रातः काल कृतं तैश्च शालया मम्य ह मं । पाक
कृत्वा पुनः सर्वं नैवेद्यं हृषया । मोषा रं हृते च त्रयं पासा धवः प । स्व वृत्तमिदं ते च य
तो शिखं हृदा रं । ते प्रादुरा म नं शिला यी । नैव वं । शालयां शिलातो यजहार ममक

[illegible]

५५५

944

श्रीमत्तन्मातृजा मन्त्रमः । सत्त्वानमन्त्रनित्यप्रनाकारोऽथ बाहुगारिः । कुर्यात्तोलमनापसं परप्राप्तं प्र॥ मायाकल्पितनानाकारं मन्त्रं
 रं भवनाकारं प्रमाणाथ मन्त्राथ परा मन्त्रो विदं परमानंद॥ १॥ मन्त्रो मन्त्रो हतिपशाकाताउपशोभवे संज्ञासं प्रादितवृत्तलोकिनलो
 कालोकचुर्दशलो कालिमः । लोकत्रयं परमलस्थानं लोकालोकमना लोकलोकेश परमोशः ॥ २॥ त्रिविधपरिष्कारं धृतिं नि
 मारं भवरागं धृतिं च स्यं वनीताहारं मनाहारं भुवनहारं म॥ त्रिविधस्फुटवैतविरमिशया ज्ञासमनाभासं भवेत्तैव लयां ॥ ३॥
 विदं स्पृष्टनामं न वदनामनामं गोधी गोधरं दूरं पुरा मन्त्रो विदं परमानंदम॥ ४॥ मन्त्रानं व्याकुलं गोपी वल्लभपासं योगमुपा
 डं व्यादितसतीरं धादिव्वाभुतं मुपादायाकवर्तम॥ निर्दूतं यशो कविमोहं उरुं उरुं रतस्थं सत्तामन्त्रशरीरं ॥ ५॥ कांतं का
 र्यामादि मन्त्रादि काले कालं द्विभासं कालिनी रुद्र कालिय शीर्षं सत्त्वसत्त्वम॥ काले काले कालाशेषं कलिताशेषं कलि
 नाशेषं कालत्रयं गुरा मन्त्रं ॥ ६॥ वेदं वनं भुवि वंदारं कुर्यात्वेदं राधितं वेदं हृदं भाग्यं लभेदस्मै संधानं परमानंदम॥ ७॥
 वेदं शिवं प्रहसं निमार्जनं संधानं परमं वेदं वेदं शेषं गुरा ॥ ८॥ विदं विदं कमेतदं श्रीते गोविदापितितेतामिने
 दां च्युतमाधवविमोहो कुलनायकं कमेति॥ गोविदं धिस्तुराजं ध्यानं संधानं जलधोतसं मन्त्राद्यो गोविदं परमानं नमते मन्त्रं
 स्थंसतमभ्येति॥ ९॥ इति श्रीमद्भक्त्यारवायविरचिते गोविंदसत्त्वसंस्कृति॥ १॥ मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा

भवेत्तैव हि वेदं प्रभुवेत्ता नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः । नमो नमः ।
 दहते नमजगत्कीर्तिं परहो गं नमः प्रवीर्यं कं चारित्र्यं सत्ताजलिं गुरा गुरा मन्त्रं पावनं ल॥ संकृतेः सकला
 पदां शिवं परकारं पाटो दृढः शीलं येनेति नित्यं विलसन्निखिलं त्रैलोक्यं च उभरि॥ १॥
 जानन्नोत भर्तृति भवजागतरत्नं जानु सा



श्रीगणेशायनमः शौनकउ० सूतसूतमहाबुद्धेश्वरीरामचरितवद यस्यश्रवणमात्रेणभवंशुकोवसंशयः उत
 नाचकयंसीतासाक्षादस्मीक्षितेतितावत् कारणवदमेविद्वरामेणोदाहितानुनः सूतउ० एकदासुखमासी
 नःश्रियासाईश्रियापतिः वैकुण्ठेपरमिद्विषयार्थदःपरिसिच्यते वसति यत्रपुरुषाः नित्यमुक्तहरेःपद यन्त्रेनः
 श्रयसेनामवनेकामदपेक्षणां परिक्रमंतिवैकुण्ठेदेवासुयुवतीगणेः गायेत्रितुंगेदेवास्तत्त्वविचरेःपुरः यमा
 याप्रभुतातत्रजनानांभ्रमकरिणी इदिराप्रभुतातत्ररक्तसलतमोसिनो यत्रलक्ष्मीर्महाराज्ञीजगतोपाख्येस
 मा लसन्तिमुनयोपयमुक्तानोरामभिःसह पार्यदास्तत्रसोभनेविषसेनादयःसदा नृत्यत्यस्तरसोयत्रउर्वेश
 पासहस्रशः ऋतुराजश्रग्धरोल्लङ्घनायतिनित्यः तस्यकन्यामहारूपानाम्नावासितिकामता सावृत्यहि
 रेरभेलक्ष्माचसहतिष्ठतः नृत्यगानप्रवीणाःसर्वभार्वैभिर्विनयतया भावकदासहेतुश्रयगारेवीजमादिमे प्रेम
 मानःसोनेप्रणश्चलेहोरागश्रयसस्यतः ११ अतुरागसस्यवासादेकुरःफलवसया कोकिलाकुशमानौतिफ
 लेभोगसस्यवच कदासस्त्रिविधैश्यामस्तरा लुप्यतिः हासोपिविविधस्तत्रमिथोयुगौशशिप्रभाःओ
 गिकोवाचिकसहदाहायैःसालिकोपरा चतुर्थमनयश्चतिविस्तरयेचनौदेके इतिकेत्येतातस्यविषयाक
 थितापुनः चित्तदृष्ट्यापिकाकिचिदास्तुल्यैनुकारिणी इतिभेदेवैभ्योपुल्लेकपम्भोःसनातनाः नाव्यधर्मोऽपि
 द्वाभेदउकोहिद्रांस्थणा १६ जवलेस्थिरतोरयाभ्रमरीदृष्टिरभ्रमः प्रीतिमेधाचयोतिगीतिश्रौरत्रप्राणार

ले

शिव.

३

शस्त्रतः १० ओगिकाभिर्नैर्येवभावनेवव्यनक्ति यत् तन्मिथ्यमार्गज्येनवाल्मीकिःसुविरज्वीत १० गात्र
 विसिपमात्रेनुसकोधिनयवर्जिते ओगिकोक्तप्रकारेणनृत्यश्रुतरभीरतः ११ अथैसत्यसुरैर्लोकनृत्यमा
 ललायश्चिते शिरेनेत्रकरादीनामगानोमलेनसति २० कायास्थितिमेतानेत्रहारीरसाप्रकीर्तिता सेप्रदा
 यातशरणेमुद्राहृदयरंजिनी २१ यत्रमध्यिनसंचेतैनेरैर्येणवर्जने प्रमाणैरखयायुक्तिमिरंनृत्यप्रचसते
 २२ यतोहस्तस्ततोदृष्ट्येतोदृष्टस्तोमनः यतोमनस्तोभावोयतोभावस्तोतरसः ओगेनावलयेकींतेह
 स्तनार्थेप्रदयीयत् चसुभ्योभार्वाभित्वापदाभ्यातालीनणयः २४ भानवीमेनवीकाव्यागजलीलातरेगि
 नी हेसीमृगीखेजरीटीगतयःसप्तचलिमाः लवोहसोमपूर्यश्चहस्तःऊज्जरस्यवचं गितिरःकुङ्कुटोमीनो
 गतयोलास्यहेतवः इत्यादिनृत्यभेदेनश्रुतोषयामाससाहारे वासंतिकासरीयेयश्चावभोषेमनोरंभे २७
 हावेभावंचतस्यास्तुस्मरप्रहाजनार्दनः वरंभूहिप्रवणेलेमतःप्राप्यसिन्धुतिश्चितं इत्येसांप्रेरिताकालाह
 णालोकधारिणा लज्जितासाप्रवीलेबेलक्ष्माःसुरवचपरयति २९ अस्याहार्दतुविज्ञायलक्ष्मीप्रोवाचसा
 रे भविव्यतिष्ठेपतिस्तिष्ठेस्त्वावतारेचदापर ३० लंकापिलक्ष्म्याराज्ञीच अक्षोमयेभविष्यति सूतउ०
 लक्ष्म्यापादोप्रणम्यायप्रोवाचवर्वाणिनी वासंतिकोवाच कथंचेतायुगेनाहभविष्यामिहरेःप्रिया राम
 चेद्रवतारेहेकाभविष्यामिशोभने ३२ श्रीरमावाच चेतायुगेचश्रीरामाभविष्यसिपतिमेम एकपत्नी

सं०३०

२

व्रततत्पुनर्विद्वन्त्येकच ३३. तत्राह्वमविष्णामिनाम्नासीतावभूतत्वात् तत्रलेमुभगानाम्नासखीलेमप्रपा
 स्मसि ३४ आचयोः किंकरलेचब्रह्मप्राप्तिकरेतव भूमेभौरावतारायरावणस्यवपायच भूलोकचत्रजिष्वा
 मपतिनासहसुलोचने आयममपतिश्रीमास्त्रोषणसखेनच सुदर्शनेनसुयोध्यायोगहृद्दारायस्यच
 रामलस्मणशत्रुप्रभरितोदितिसंज्ञा ३५ अहंकन्यामविष्णामिजनकस्यमहीतलात् सखीशक्तिरुर्मिलाच
 जनकस्यचशौरसी ३६ पत्नीयांजनकस्यापिमांडवीतिप्रकीर्तिता श्रुतकीर्तीमुचकस्यकुडाचजसुतेदमे ३७
 उत्पत्तेतमहाभागविमलेप्रसुतेजने भविष्यतिर्त्तमेसत्त्वाअणिमाचाविभूतयः ४० वाक्नेनिशम्यलक्ष्मी
 लुमुमुदेवासंतिताकतदा वैकुंडवासिनः सर्वसहवासार्थमनोरधुः ४१ देवलोकेपरित्यज्य सुयोध्यांजन्मलेभि
 रे अणिमाचाः श्रियः सत्त्वा मिथिलायोजन्मलेभिरे इतिकथितं ब्रह्मवृज्जानकाः जन्मकारणे आतः परं म
 हादिव्यश्रूपांतजन्मसंभव ४३ ॥ ॥ इतिश्रीसत्यापाख्यानेस्तुतशौनकसंवादेपंचदशोऽध्यायः ५० ॥ ॥ सप्त
 ३० एकदाजनकोराजा मिथिलामावसत्पुत्री यदायमानसंचक्रेतयाजानपरावृज्जानात् कथीवृत्तवोसखी
 हयसंभाराख्याप्यभूरिशः २ लागलेचविधायायसातकैभमयेशुभं मासोत्तमेमहापुन्येवैशारखमाच
 वप्रिये कुडवारेशुक्लपत्नेनबभौपुण्यसंयुता ४ पुत्रिण्याः पुत्रजन्तुलाजनकस्तुनरेखरः हलेनकर्षणेन
 केसर्वेषांपश्यतासती ५ लागलस्यमुखेप्रातुरमाकन्याविनिर्गता भित्वासातितलेसचः सीतानाम्ना

शिव
२

४४

वभूवसा ६ ततोदेदभिषेनेदुःखात्तेतुः पुण्यदृष्टयः मेधकीश्वजगुः सर्वेनवृत्त्यासरोमणाः ७ संबोधा
 जनकवाणीदेवैः प्रोक्ताब्रवीरिंदे पाल्यताचलपाराजन्त्येकन्यकापया ८ भविष्यतिपरश्रेयोशुनयाकन्य
 क्तातव मुमोदजनकोराजाश्रुत्वावसंगिरित ९ नारदस्तुतदागम्यशिशयामासधृपतिः तदातुजनकोरा
 जानिजाकेसमरोहयत् १० यत्नेः समपेयामासमुनेत्रायैः श्रुतपातिः तयासोर्गसितासीतावत्पुष्यपितृवत्स
 नि युक्तपसेययानित्येहिजराजस्यकीमुही ततः कन्यामुनेत्राया मुर्मिलानामनामतः १२ कुडाचजस्यया
 पत्नीकन्याहयमनीजनव श्रुतकीर्तीमांडवीचप्राजात्पापनाशिनी १३ वासंतितापुरात्रेताजनकस्यचमेनि
 णः सुभगानामविख्यातासीतायाः सासखीमता १४ सिद्धोपाध्दशोक्तानिदृश्यश्चनवरत्नाः सखीभावे
 प्रयाताश्चजानकाः जनकालये १५ यदाप्रभृतिसीतातुजाताजनकवैश्रमि लोकपालनिभाः सर्वधनधान्यै
 श्र्येयेवैः १६ वृष्टपेजानकीनित्येहात्मनस्तुसखीगणेः चिक्रीडः परमांकीशंजगरानंददायिनी १७ पृष्ट
 वोपिवेदेहीरुपातिसपतायवेभौ स्थोमवलक्ष्यतेपोरैरवरोपेश्चमाहर्भिः १८ शृंगारेहावभावचंदहृदो
 तथैवच विजहारस्वयेसीतासखीभिः परिवारिता ययाविलोक्यतेसीतासभावास्तुवस्त्रियम् अमन्यता
 नंदहृदभावाधिकं करोतिस्व २० त्तानार्थं तुकराचिबुसरोयातिसखीगणेः तदाविलोक्यतलोकं राक्षसेव
 हिधर्मतः २१ करदाचिद्वारिकोयातिपूजामारायभूयसी पूजनार्थं तु गोप्यं स्तुनियुक्तामाहणांगणेः २२

कृताकदाचित्पाकंतु ब्राह्मणाभोजयत्सयं ब्राह्मणैर्वदतवन्नेत्यायेतचरमातिथं २३ अस्याकदासमात्रेणसे
परापूर्व्यतेजगत् क्वचिद्वापत्तिसासीतास्त्रिकतेचसखीगणे २४ क्वचिद्वाद्युतेवीणासुंदरसुखिरादिकान्
आलिकानां क्वचिन्मत्स्यं पश्यति प्रेमतत्परा २५ मालापुष्पमयीकृतादेवताभ्यां प्रयच्छति सुनेजाननवी
तस्याः दृष्टानां पुष्पमीदृश २६ रूपेणाप्रतिभादृष्टातयास्यामवतीमुता विवाहायै मनश्चक्रे जानक्याः किल
चैकदा २७ स्मृतं ३० सीरञ्जतं महाराजमेकं तेहरितत्परं दृष्ट्वा राज्ञी सुनेचाच प्रत्युवाच महीपति २८
सुनेचोवाच इयंकन्यामशीपालसीतानास्मीमहाशुभा विवाहक्रियतामस्याः पतिनासदृशं नैव २९ इती
नाचमहानंदो विवाहं नैव भविष्यति जनक ३० चित्तामस्यास्ति भो भद्रं जानक्याः परिणयशुभा ३१ सा तु भा
ग्येन कन्यायाः परिपूर्णा भविष्यति इति विश्राम्य स्तोपत्कीर्तिना पतिनजमरिरे ३२ सयंकृष्णसनेराजा सुधा
पनिशचित्तया संप्रसासाहं देवाराजानवासमब्रवीत् ३३ श्रीरुद्र उ ३४ श्रूयतां तव नराजत्रकन्योपरि
नयेमम धनुर्मंदीयते गेहे पूजितं तव पूर्वजैः ३५ तस्य प्रतिज्ञातया कार्थभंगया तोलनाय च तोलयित्वा च
योभंगं कारयेद्दनुर्वीरमम ३६ तमेदिंयातया कन्या सेवमुक्ता गतोदरः जनकस्तु ताराजा आबया माससे
पणं ३७ एयिन्नासवंतोके पुनरेदेवमुग्रिशः तच्छलाभं भुजः सर्वज्ञातमुभिषिक्तोऽपुंरी ३८ धनुर्वीर
गभूमिस्तु निर्मिता वक्ररत्नैः तस्मिन्नाकस्थलं रम्यमानितं सर्वराजभिः ३९ ब्राह्मणाः सत्रियास्तत्र वेश्याः

शिव-

३०

वेश्याः शूद्रास्तथा शिवयः प्राकृताश्च जनाः सर्वे नागरोदरावांसिनः ३९ सुनयश्च तथा सर्वे शिष्यैः परितः स्थिताः ज
नकस्थतया पत्नीनानावेधपरास्थिताः ३९ मागधाश्च तथा सर्वे सत्तां वितास्तिकालया अन्ये च नागराः सर्वे पोरा
जानपदास्तथा समास्थिता यथान्यायं सर्वे कैतुं कृतान्विताः सचिवेरावर्णस्येव प्रहंस्तानामनामतः सौम्याश्च
तांसभामभ्येरावर्णेनैव प्रेषितः बलेः पुत्रो महावीर्यो पाणानाममहावली सहस्रबाहुर्कथिनयः शिवसमतोषयत्
सौम्यास्थितः सभामभ्येकन्याहेतोर्महामनाः सुपन्नानामभूपालः शंकाशयापराक्रमी शिवमकिरतः सत्सक्त
त्पसेनया युतः आस्थितः सभामभ्येकन्यायै सोपि रमतिः स्वजाति समानेषु बाधेषु प्रगदत्तु च कन्यासभाय
तातत्र सीतानास्मासखीगणे तत्र शृंगारवैराजराज्ञा जाता सहस्रशः कश्चित्करं बंकरीदेकलया माससृपि
पद्मं च आभया मासपाणिना च नरापिः दधारपद्मपत्राणि नरेवैः किंचित्मपन्निव केचिद्दार्ता प्रलापचस्यी
चक्रे महामनाः केचिन्मुक्तामयीमालो गणयामासपाणिना केनचित्कारणेनैव जहास कोपि भूषति खड्ग
कोशादिकृष्यैव दर्शयामास च पराश्व तोद्वलमसणं कश्चिद्वक्राच महामनाः हस्तमुत्थिष्येवगेन रत्नमुद्रा वि
रूपितं वभाषे च सभामभ्येवं दर्शयन् पाणिभूषणं जहसे कश्च न भूषालोदंता न्नेदृशो पन्निव प्रमाजैश्च
णिभूपालः पाणिना सेननिर्भयः स्वैव भूषणं शृंगारो जनानां रंगवासिनो आभयमातदासीता पशुवो निकटे तु
दा पूजयित्वा पिनाकं तु जगाम मातृसन्निधौ ५५ ॥ इति श्रीसत्योपाख्यानोत्तरं त्रैलोक्यं संवत् १८८५ ॥

सं०
४

मोध्यायः ५३ सूत उ० मागधासुपणं सर्वेजनकस्य भूपतीन् आवयामासु से सर्वे वाहनुस्तिष्य संसदि १
तच्छुत्वा भूमुना सर्वे न्यायामचक्रिरे मुदा केचित्परिकरं बन्धुपेनिकटेययो सार्पाका रचतं दत्तावेपमानेव
भवत् उपविश्यासनेनेष्य चतुर्मास्येनान्द्री पतीन् धनुर्मिषेण सार्पाकमस्मान्वाहन् संशयः पुनरन्ये भू
पालो जगाम धनुषोतिके ओषो बभूव सस्तं च पापं नैव नुदद्दृष्टो हस्तो प्रासाय प्रप्रकृत्वा स्तिवायो ह भोजना
जह मुक्तुश्च श्रितिलोकां ज्ञातया किं सत्वेतामा धनुषोदशेन नृणां स्ति तोलेन भजेनेन किं सू इत्येव ह स्ति त सर्वे
विशे च शने पुनः अन्य कश्चन भूपाल स्य चालच निजा सनात् ७ सिंह ग्रीमहा गरीशमस्तो स्य करे ध
त् तमेव दशैयामास चाप सेंही तनुं निजा ८ सिंह दृष्ट्वा पपातो व्योवि विशे ज्ञासने भयात् किं किमिति
लोकैस्तु पृष्टः ओषो बभूव भूपतीन् सिंहो यंचापरूपेण जनकेन विवेशितः भूतो यजनको राजा धातयिष्यति
भूपतीन् ९ पुनरन्यः समुद्राय पिना कनिकटेययो पक्ष्यो राजा पाणिभ्यां जवेन च बलेन च न चक्रे पपु
स्तत्र तोममात्रे च संसदि पुनरन्यः समुद्राय धनुषो निकटेययो शिवरूपे नुदद्दृष्टो चापं चेही चेतं सदा कै
शुप्रमाणं कृत्वा च विवेश च निजा सने एकदा संसिद्धं कृत्वा भूपानां शतमुत्तमं उरुषा पयामासु रत्नान् शिव
चाल धनुषां सदा प्रोवृत्त दानो ते सर्वे मेरुं किंचापरूपं कृत्वा वलेः पुत्रस्तदा बाणश्च चालच निजा सना
त् १६ धनुषस्तो लना र्हिद तथा भोगयवी येवान् ददरां शिवरूपे च ननाम च पुनः पुनः उवाच च स भाम



त्पा

शिवः
४

गो

ऐशिवरूपं धनुस्तिदं गम्यते च मया गोहेनास्ति मे योग्यता सिद्ध तदा प्राह प्रहस्तु सेवैवां शृणुतामिदं प्रहस्त उ०
रेमूद शृणु मेवां कंहिता र्थं तव वचसं रावणेनामपोलस्यो राजा संश्रमाहा वली लेकेधिपतिश्चोमान्ता स्तो हे श्ववणा
वुजः २० तस्मै देहि नो कन्याश्च सति भविष्यति रावणस्तु महावीरो देवदानवदंष्ट्रा २१ तुभ्यं स्यात्तु
तातु पृथ्वी सागरं मेखलासू जनक उ० यदि सोपि स मागस्य धनुषस्तोले न बलात् कुर्यात्तस्मिं प्रास्थाभिना न्यथा
प्रदद्यामहं प्रहस्त उ० ब्रह्मोत्तरं यंचापस्तस्मान्नेलति रावणः कदाचिदन्परे वस्य तत्सनाङ्गीतो नयेत् इत्युक्त्वा
सहस्राणां पंगमना पमोदं हरिषां ब्रह्मवोरा राजा कन्यामितां सुनिश्चितं जनक उ० हरणं यदि कन्यायां रावणस्तु
रिष्यति नाशाय दरां कंठस्य सीतां चैव भविष्यति स्यत उ० एवं ब्रुवाणं जनकं राजा ससलमभस्ते यत् जगाम इमेना
सोपिलं कामेव च पापधीः राससे दृगुतेलं कोमुधनानामभूपतिः उवाच जनकं वा कंश्च यत्तां भो नरेश्वर सुधनो
वाच मशुचरी यत्तां कन्यां धवृषा सह भूमिप नदास्यति चेद्वा जगत्कुलं विष्यति तं पुं निर्गच्छेत् रंगभूमे स्तपति
मिमहीतले तादृशो मम दोषे श्वोद्रे मुष्टि भिरैव एवं कोलाहल जात जनकस्य च पतिणः खड्गं मेधरास
वतं स्तुर्जनक सतिषो विवेकिनः सुधनस्य भूषाः निर्वोये यत्तलतः रंगभूमिं निर्गम्य सुधनकोपमूर्छितः
ध हरेस्वमिथिलोदरं तोलेन यास सहूपतिः सुधन्या सहूपतिः शत राजा जनकं वीर्यवान् युधता मेव ते पापुगता सं
वत्सरोक्षितः निरुद्धं न गरीते श्वदणधान्यं न चापतेत् ततश्च उः स्तिता राजा सस्मात् च सदा शिव शिवेन प्राप्तिता

स-उ० सेनादेवानांचवलीपसी देवसेनांतदाप्राप्य युधुपेजनको नृपः सुधुनानिहेतुयुद्धेननेकेनमहात्मना अन्येपलायिताः
 सर्वेलेनुदमानासदाजनेः आकाशपानगरीतस्य आतर्नकुश्राध्वत विरपेतत्रराजानेमिस्तुमास्तदुत्पन्नः पुनर्येदेस
 मारभेजनकस्तुमहीपतिः आकाशपानासन्पानूनांनदशपतीभ्यः समागताःपुनस्तिपाचपतोत्तलनमेतने समा
 जस्तुमहानास्तीनराणांच विदुस्ततो ॥ ॥ इति श्रीसत्यापारथोनस्तुतिनकस्तोदहिपंचाशतमोऽध्यायः ॥ ५२ ॥
 सूतउ० ईश्वरणासमाज्ञातिविश्वामित्रोमहामुनिः शिशुश्चमात्रावालाशु रामार्थमुनिपुंगवः १ साकेतनगरदृष्ट्वा
 मुदेकौशिकोमुनिः राजद्वारेसमागत्यदरेशीमहतीश्वरं द्वारपालाःसमागत्यप्रणम्यः शिरसाभुजिसू मुनिनाप्र
 धिताःसर्वराजानंचविजिह्वायुः राजादरशश्चशुक्लावसिष्ठादिभिरन्विताः पूजामादायमहतीनिर्जगामसभास
 दैः आगत्यचरणैराज्ञानपुष्टेशिरसामुनेः आलिङ्गितस्तुमुनिनाश्ववसिष्ठेनमहामुनिः राजानंचसमातिम्यवि
 वशातःपुनर्वशी याद्यमर्ष्येदंराजाकातीचकुः परस्परं दशारथउ० आज्ञाप्यतोचमुदेवआज्ञाप्योहंतवानप
 तन्यायाकीयतेसर्वप्राणैरर्थैस्तुतेसव १ सूतउ० वाकंशुक्लानेरशस्यजहृषैमुनिपुंगवः प्रत्युवाचमहापीर
 कौशिकोमुनिसत्तमः विश्वामित्रउ० दीयतांराजज्ञाहेलरामचंद्रस्तयाहिम तयोकेनसुतेःप्राणैरर्थैका
 र्थंचसाधये दशारथउ० यथेष्टंरुसुतासुवेकापीर्यमात्मनस्त्वया यावनाचरचूनांहिव्यथोज्ञातानकस्वचि
 त् कृच्छ्रास्त्वामयापुनंतुभंरास्यामिभोमुने वसिष्ठंचसमामेन्यकोशत्योचमहामनाः राममाहृयविधिवत्

शिव.
५

स्मरणेनसमन्वितः सुनयेनपर्वयामासह्यात्रिशासहस्रभिः पुष्यदृष्टिर्महत्यासीदयोध्याश्ववाथिबु पितुराज्ञाकरी
 तोचपादयोपेतनुसरा प्रवत्येतोश्चमूर्धन्योपतन्यश्वविद्वः जेजाम्भाराजानस्यचालमुनिसत्तमः लक्षणा
 नुचरेरामेपरिशुमुदाल्लिताः आशिष्युयुजेराजावाहीनचक्षिणः आश्विरसमात्रवाहित्यानप्रबोजनं
 पितुनैवभयेकोशेषवद्दशरथउ० गच्छतोपन्विनोतोचमुनेःपश्चात्पराहिको योराणोनेत्रजलेश्चमोचचक्रगुणे
 तोरणो रेततुसुतरांतोचगपेभीगोतुस्मरिणो मातुप्रादान्यपम्यायलम्बतःपुरुषवैभो भास्त्रेणयथाभासोभोम
 तैचत्रमाधवो तयोस्तुगमनंतत्रहस्ताभामयशोभनं ऊयोध्यायाशिनेगेत्यविशोप्रादात्माहामुनिः २० बलांचा
 तिवलोचिवनमस्त्रोतयथापथि विद्ययोश्चप्रभावेनमातुःक्रेदुगताविव २० इतिहोस्तुपूर्वोयामुनिनेकिश्चसायुक्तः
 शृगुवन्नाभोयथोनेवलेभेतवाहनयथा वापुंभिर्धुतोबालोपंकनानांसुगंधिभिः पतत्रिणाश्वैर्नोदेनेलक्षराःस
 खछायया २३ पश्यन्ग्रामान्ययोराभामुनिनालक्ष्मणेनच धूम्रिणोवध्यलेरामेपश्यतिस्समुलोचनेः २४ इति
 निर्गत्यसहसाहानेरेलेभिरेवद्रु पिवतोवारुणीमापावृणोपीत्यश्रयतराघवः बलात्तात्सहृष्टापास्यानोनेन
 मोहितान् तयोपत्थिरसमानयलोचनेकृण्विस्तृतेः हावभावेनजानेत्योग्राभीन्यौराघवेययुः जानुवाचामेनेव
 पारीशुचक्रगेपकच गावश्चइतिहोवत्तानुलिहंतीश्वदशोच ताश्चदृष्टातदारामोमनसाचविचारयत् अहमपि
 वंकरिष्यामिदापरेकृष्णजन्मनि केदारिकानांपत्नस्तुशुक्रान्विद्रावयंतुगताः तावन्मृगाश्चखारेतिश्रीहीतचपुनं

निचेतु

नारसिंह
५५

सं-३०

६

द्वेताः सहासे मुनिनाभ्यां गोपिकाश्च विलोकयन् ललटे विभती पुष्पं बंधूकं स्वर्गापिकाः सृगान्विता वसिष्ठया तन्मु-
 जमुष्मन्वगतः कुचविदधती पीनमंचलनच समिताः गीतमाकण्ठे मन्यासां चरादिति सृगाः कृषी इत्यं विलोकयन्
 रामो मुनेः पश्चात् यथो मुदा स्वयं स्तुतुं पवदस्वाकंदर्पे सट्टा कर्तुं ३३ आतसी पुष्पं स कंसे नृश्रेष्ठं महां भुजे धनुसी
 ण परे वीरनाभूषण मूर्धितः सान्तिर्कभावमापेड मेनयेन प्रपीडिताः तरुण पुरुषे हस्ता येन द्वैवतियोषिता विधाय
 तजेनी मोह पृच्छति स्म रित्रयो मुदा सत्यं हि मुने मयुं कस्वचैमाकुमारकेन शिष्या वा तत्र पुनैवा मातान येन मुकुत्रचित्
 यथा पुत्रो ह्यपि न्यस्तो क्रतोश्च लोभो पान्वितो शिश्नश्च मंचनीयं तपि प्रादं त्रैतो च प्रेममतः स्मृतं ३० एतस्मिन् तरे गोपावना
 न्नासा जनेकसां तानीत्यव मुदो न मुदं उ वल्लयं वीगताः कुचुः परस्परं तदु विश्रामं न पुनः पुनः अयनसफलं न
 न्न अयनसफलतपः यनो हं भवात्प्रातः पुत्राभ्यां तु वपस्य च स्तुते वेषू जयामासु मुनिराज कुमारकेन सिद्ध्यमं
 प्रजन्मुत्तु उषि वा तत्राश्वरी मोगे वनं महाभीमं हस्वाराजकुमारकेन अपि नैव चक्रुश्च यो ह्यस्तु योके शि कस्य च
 तयो निनादं तच्छ्रुत्वा च न गामथ ताडका दृष्टमभयान कसा च भाद्रपदमासि कपालकुंडला सा च वक्रपंक्तिः
 थापने वेपथंती महान्तु सा प्रेतवीराणि विभ्रती महानादं प्रकुर्वीणामहाभूति च वषेती अभ्यावित्तयारामभू-
 त्वा च पवनोत्थया उद्यम्य भुजयष्टि च आपतंती च ताडकां पुरुषं च मातया युक्तां न जघानेति के वधूः ३३ को
 सि केन समाहूतः सा शरं धनु रूपादं दं घृणया सह तदा वाने सुमोच ताडकां पवि ३६ विदीर्णं दृश्य सा तु पपात

शिव०

६

६ राजिलानः नसतीः

परणीतले महानादं प्रकुर्वीणात्पत्न्यो देह च सर्गता ४९ को शिकस्तु समाह्वय रामराजीवलोचनं मंत्रान्तरमर्षया मा
 सनस्थापितेन तापितः ४० सूर्यकोतो यथा ह्योत धामं त्रेण द्योतिताः का माश्रमं पुनः प्राप्य का मरुत्पाव भूवह ४१
 सिद्ध्यमं समागच्छ सिद्धयै को शिकस्य उर्कं दितो वभूवात्रा मना ह्रमं वपुरा ४२ दशिते को शिकं तत्र धनु रौणध
 रोचंती २२ सत्तु सावधानो मुने येन महेजसे ४३ सूर्यचंद्रौ यथा लोकं मंथेन तम सट्टं त तत्तु पृष्टदिवसं काजमुशो
 ससावरे रुधिरं वट्टु सर्वैराम ऊर्ध्वं विलोकयन् नियमाद्गुणमुद्वृत्तौ चंद्रं प्रभुः ४४ पक्षिणो मोजयामासु ३५
 होर्षित्वं लेनैव अन्येष्टु न प्रवृत्तस्तु किमेभिले पुरासंसे ४६ राजिले पुंयु यथा स्थेन प्रवर्तते तगर्वतः विक्रमं तु यो दे
 स्तासाधु मेने महा मुनिः ४७ ऋषयः पूजया च कुः यज्ञं पूर्णं प्रचक्रुः मुनि प्रणम्य तो वीर्य मुमुदा ते कुमारके ४८
 आशिवा योजयामासु मुनि पाणतले नैव ॥ ॥ इति श्री सत्योपास्थाने सृष्टीन क संवादो विपचात्रा त मोभायः
 ४३ ॥ ॥ तस्मिन्काले नरे रास्य जनकस्य महात्मनः प्रतीहारो महापुत्रः सर्वैकुमारारभ्या समनितः २ जगमुश्रमिथिलो संवे विश्रामि त्र
 वीन्यज्ञार्थं विजिज्ञोपे स्मृतं ३ तच्छ्रुत्वा मुनयः सर्वैकुमारारभ्या समनितः ३ जगमुश्रमिथिलो संवे विश्रामि त्र
 पुरःसराः कथा प्रसंगं त्वं तोरे सट्टं न द्युपवर्णने ३ आपतुः परमं हर्षं मुनिभ्यो रामलक्ष्मणेन तोर्ने विविच्य सति
 गौतमः श्रममंडले ४ अश्वत्थ तरो तपसः मिथिलया समीपतः यत्राहं ल्या महेन्द्रस्य साणपत्नी व भूवह ५
 तेनाहं ल्या शिला ज्ञाताशा पांशो तत्र स्य च तत्सर्वं कथयामास रामाय परमात्मने ६ तच्छ्रुत्वा रामचंद्रस्तु सिला

३५

सं०३

ॐ प्रवक्ष्ये रामपादतलोद्भाषितः प्राप्तिरिति परि ७ तस्याः पतनमात्रेण मुक्तत्वापादभूवह, सुंदरीसामभव
क्षिप्रं रामचंद्रप्रसादतः ८ संस्तुय रघुनाथस्य पात्मासहगता पुनः विश्वामित्रोपि रोमणलक्षणेन न पतिभिः ९
जगाम मिथिलो वेगात् पशुपतेरिदं स्या मिथिलो पवनेन तत्र राजानो बहवर्षितः १० दृक्गते सर्वमुखं देवतासु मु
निभिः सह राजदूतो मुनिद्वयसंगमना यमनो वधे ११ गता प्रणम्य राजानं मुनिप्राप्तिं निवेदयत् तच्छ्रुत्वा जनके
राजा मंत्रिमित्रोद्दोषे सह १२ अन्येश्च नामोरे श्ववना नामालपाणिभिः दक्षेनाथसमायातं कोशिकस्य मुने सुंदरा
१३ आगत्य प्रणतिचक्रं नो गेरे मंत्रिमिह सह कोशिकोऽपि महायोगी इत्याच परमासनात् १४ बाहुप्रासादो रत्नानं
परिषंगो च कारह, सताने दोषि चागत्य प्रणाममकरोत्तदा आलिलिख्य यथा न्यायं राजानं दंतु कोशिकः निवेशया
मासमुदात्तं सन्मुखं महा मनाः १५ राजानं देवराजानं तथा न्यायान्तमंत्रिणः विश्वामित्रो वाच कुशलं वज्रैरा
जवत्सप्तशेखराधुना येया कुशलतो राजा वा जेतै च सदामुसी राजो वाच सर्ववकुशलं नाथैत्यतिष्ठति रत्नै
१६ येया कुशलं कामाक्षिकुशलं तेषु निपत्य त्वं कुशलं मूर्तिश्च तपसा इकरणं वै १७ हृत् ३० एतस्मिन्नेत
रे राजा ददौ रामलक्ष्मणे तथा सर्वे जनान् श्ववददृशुस्तो कुमारं को २० अतसी पुष्पसेकांशं रामराजीवलोचनं
कोचनामंदिनी यंच प्रकुल्य पंक्तोत्पणं २१ कौटिमन्मथलावभ्यंदं चोतिं न जविश्ये धनुर्वाणधरो तो चरव्यं
चकन कस्तुरी दधौ तामस्तके दिव्यां काचनी पट्टिकां शुभी स्तवकं मणिमुत्तमं नो पुण्याणां च तया विधं २३ वष्टया

मन्त्र

शिव

श्वमहादिव्ये दधंतो कर्णकुंडले नानारत्नमयै दिव्यहस्तैश्च विभूषितं २४ तिलकं धारयंतो चरो वनाकुलुमोद्भवे तथा पूर्ण
हरिद्राया दधानो परमादृतो २५ सुसंमनो दूरं स्पंदतं पंक्तिविशतितं नाश्रोत्रकस्य चतुर्बलं ज्ञायंतो मुकुटैः २६ कंठे
चक्रदिकारं म्यानारत्नसमुद्भवो कयूरैश्च महादिव्यैः सीधुर्कोमितास्तयोः २७ तलैश्च तया दिव्यैः नानारत्नविभूषितैः
सुद्रामिरत्नपुकाभिरंघ्रि लोचुविराजितो २८ दधंतो कंचुके पीतकंठो वै पीतमंथुकं प्रावारं च तया पीतदधंतो मौक्तिकैश्च
ज २९ इषुषी च महारथैः नानाबोधिश्च पूजितो उपानहाद्दृष्टो पादभूषणभूषितो ३० योगा यंतो दिशः सर्वलोचनसा
भास्करा यमो द्वादशैः चंद्रांशैः कंठ्या कोमलसदृशा यमो ३१ बुध्या बृहस्पतिस्तुल्योऽस्य मया एष्यविशंसो मोहयंतो जनान्
स्तर्कैश्च स्मितननजितान्यरां ३२ तथा कपोतैः तद्वत्पप्रकृजनेन को मुनिं जनकः भगवत्यो गिनोश्च कस्य चमो क
कुमारो ३३ मोहयंतो जनान् सर्वोक्तोऽप्यारुणेण मंगतानां विश्वामित्र ३४ मृशुराजं ध्यातं ध्यातं वल्लभात्तद्विषयं हं सो
शर्चं भामयामास बाणैर्नैकेन राघवः सुबाहो निर्धनं च केदितो येन तु पवित्रा अन्या नूत पावुं सोमि निरिवंद्य तस्य रत्नैः
अतसी पुष्पसेकांशं रामराजीवलोचनं ३५ नाण्या अलेमहाराज त्वं वल्लभं न शक्नोत समुद्रं भृशतामं प्रवाप्य क
मेदिनी दशनीते धनुर् ये दंशे स माया तोर पूजतः बाण्या अलेमहाराज त्वं वल्लभं न शक्नोत समुद्रं भृशतामं प्रवाप्य क
मविष्यति ॥ ॥ इति श्री सत्यापास्वने स्तुतौ जनकसंबादचतुःपञ्चाशत्तमोऽध्यायः ५४ हृत् ३० उक्ते च वसभामध्यक्षि

लो

रु

५३० राममहामुनिः जनकसुमहाराजो ज्ञात्वा कुलसंभवः १ जनकसुसमुत्थाय ज्ञात्वा रथारयात्तजो राजाधिराजतनयो
 परिभेममुराजितोः २ प्राणचकार मृत्पुत्रुरामलक्षणयोः सा स्नापयामास तदा जलेनैव ज्ञात्वा संभवेः ३ रामश्च
 णजे वाया वामा योर्बलस्मण निवेद्य बकुपाणिभ्याममाजैतनको नृपः ४ जनक उ० अद्य मे सफलं जन्म अद्य
 मे सफलं तपः अद्य मे सफलं रात्यं पुरीये मिथिलापुनः ५ अद्य मे सफलं यज्ञो मुप्रभातानि जन्म यस्मादिहो
 समायोतो राजराजकुमारको ६ निमिस्तु पूर्वैके स्माकं मिह्राकुतनयो भवेत् इह्राकुत्तलजन्मादिह्राकुत्तल
 वृमो ७ कुलेतस्मिन्मो जातो पूजनीयोन संशयः साधुसाधीति ते सर्वे सप्तसुश्रजना नृपः रामरूपे समालोच्य
 मुमोहजनको नृपः बुधाविचात्रे यामास हृदये राजसत्तमः ८ किमयं नारायणो देवः लक्ष्मीकृतो न संशयः ल
 क्ष्मीसीतासमुत्तनाय जन्मो हलायनः ९ अयं नारायणो देवः स्वयं सीतावरिव्यति धनुषश्च प्रतिष्ठेयं निरखी
 चकृता मया १० कन्या चामि प्रदेशे मे प्रतिज्ञा स्थातु पातु वा अयं नारायणो देवः धनुर्भंगकरिष्यति ११ तबन्नेत्र
 मुखे सर्वैर्लभंतु किल नागराः गृहे समनराभ्योर्पश्यन्तु रामलक्षणो १२ एवं विचार्य राजा तत् हृदये मुनिमत्र
 वीत् गम्यतो मद्गृहे स्मिन्कुमाराभ्यां तपोधनेः १४ इह्राकुत्तल गृहे नैतत्त्वयं ते पाचिकिराः क्षुत्तोरमात
 त्रहोपाकृतमामोपरि १५ स्तुत उ० इति श्रुत्वा नरे राजसुवा सर्वमेथिलभूपतेः उवाच कैशिको धीमान् जनक
 प्रतिमहामनाः १६ कैशिक उ० सम्यक् व्यवसिता बुद्धिर्लवराजपि सत्तम सर्वमेव महाराज यथा त्वप्रवृत्तिमिह



त्रिव.

८

१० परंतु सावकाशेन स्वीचीनारमते महेतः अत्रैव स्थितिमेवास्तु महानेदेन संयुताः १० आगमिष्यामि ते गहो
 जनायेंनराधिप मुनिभिश्च कुमाराभ्यां प्रातःकाले तवाज्ञया ११ गम्यतो बभूव पालसंध्याकाले हिव जैते वयं वा
 पिकरिष्यामः सर्वेषु पस्थानं संशयः २० स्तुत उ० विश्वामित्रेण चाज्ञातो जगाम जनकैर्भट्टैः हृदि ध्यायन् रामरूपं ल
 क्ष्मणस्य तथा मुहुः २१ जानकीचप्रदास्मा मिह मायारूपं शालिने उभिलां लक्ष्मणो वदेव कन्यको रुचिराननो २२
 धनुषोर्भजनं वैवरा मस्तव करिष्यति मनोरथो मरीयस्तु पूर्णो भूलात्र संशयः २३ मिथिलापोजनाः सर्वे आनंदे ल
 भिरमुहुः रामैरामायकन्यां तुल्यं श्रणाय प्रदास्यति २४ हेर्षणं ज्ञायते रामभिः जनकस्य महामनाः सर्वे वदंति त्रि
 चनरत्नायै परस्परं २५ आनंदेनैव सर्वेषां सा रात्री लब्धव्यं त स्तुत उ० राजानन उड्याय प्रातःकाले लपाच
 कान् २६ आज्ञा पयामास मुद्रा क्रीयात्वा न्येजना निन्न भोजनार्थं मुनीनां तु तपोश्च राजपुत्रयोः सुनं नोनामराज्ञीच
 नोवाच नृपतिमुद्रा सखीभिः सार्द्धं भवती राजपुत्रो विलोकय २७ सीमानश्चापिकर्तव्यो मानको यो च तो मते तयास्ति
 तिच साराज्ञी प्रत्युवाच नृपते या मिथिली तदा राजा स्नात्वा द्रुतं कृतज्ञः २८ इतं तु प्रेषयामास विश्वामित्रस्य सन्नि
 पो सदृशो मुनिश्चाग्निभ्यो ज्ञात्वा च न मब्रवीत् २९ शिरस्यं जलि माराय ययो चैरं मुनीश्वरं गम्यतां भगवन् उ० प्रजनक
 स्य गृहे लया ३० भोजनार्थं कुमाराभ्यां मुनिभिश्च महामते ॥ इति श्री सत्योपाख्यानं स्तुतं ज्ञानकसंवादे पंचमो
 वाशतमोऽध्यायः ५५ ॥ ॥ स्तुत उ० इतवाचैव स माकर्ण्य सर्वे स मुनिपुंगवः जगाम राजभवनं नरनाशि राहूत

श्रीरामागमनं श्रुत्वा नरनाथो मुदं पृ० रा मे निरीत्यते सर्वे नैत्रे निमिषि जनाः २ मिथिलाधिपतिर्धन्यः इत्युच्यते
परस्परं जनकेन्द्रादरमागम्य वंदे मुनिपुंगव ३ सुनीह्रयापि प्रणम्या यच्चिन पावनतस्तदा रामोऽपिलक्ष्मणश्चापि
विदेहमिथिलाधिपं ४ दक्षिणकंठमुखा पश्चिदेहता प्रणेनतुः जगद्गतातो बालोकराभ्यां करयो मुदा अतः
पुरे निवेशय ब्राह्मणान् वेदपाठगान् प्रज्ञा यो ना विदत रुत्सं प्रमवेग पविस्तुतः सिंहासने महादिव्येना नारत्नवि
चित्रिते निवेशय बालकैः तत्र तोमरेष्वेव गाधिजे पीठानि मुनिमुख्ये भोदत्ताभुवि स्थितः पाथमर्धं स्वयं च के
नो राजन विधितंथा मालोपुष्यमथीदत्ता चंदेन न विलम्ब्य सुनेत्राना मसारादी सीतया सखिभिः सह प्रणताम
मुनेः पादौ विनयेन महीपतिः अयोध्याधिपतेः पुत्रोक्तो मलांगो महाबलो केण्डुस्य प्रकाशे च पश्यती रामल
क्ष्मणे पुनः पुनश्च पश्यती हर्षं श्रपमुदासती मुनेत्राश्रुभनेत्राभ्यां मुकुटौ मनिरीत्यते इन्द्रनीलमणित्रयोभोको
मलौकृतिमयं यः अचिंत्यैव भवं रामं कृपावाद् ईरमापति कस्या पीतचक्रो देशं वदं च न विग्रहे विमुक्तो तोप
मंदिव्यकोऽयं सुरत्नया आजा नृबाहुः श्रीरामं सुमुखं पंकजे शणं पूर्णचंद्राननं रामकृपांतरी घेतो च न
घटितेन मणीनां तुकिरीटेन विराजितं तस्यां कात्याचतुर्दिस्त्व्या सया सुमनोहरं विश्रंतं तु मनोजस्य दिव्य
चापारुणीभुवो इंदोर ईसमं हृत्पल्लवादे सुमनोहरं ऊर्ध्वं पुट्रेन शृङ्गेण भालदंडो विराजितं नाशाय शुक
नाशायः कर्पतं च महाहवि अलकेश्वर महानीलैः शोभयंतं मुखो बुजे कुंडलेन सुदीप्तं नमकराकारशोभना

शिव०

९

राजतेतुकोपेलेन हरि नृमणिनिभेन च मुखामोदेन कर्पतं चंद्रोऽश्रयतस्ततः विवाधेरेण रक्तिगदंतं पंथा विराजितं विरेल
याशेभमानं कुंकुदमनोहरं निगूळं नुपीनासो कंदं के सुमपाणि श्रौवत्सु मुरसारदंडो विष्णो वामपाश्वर्के भुजद्वय
नशेभं तं अंगे गेर्बले येनपि मह्यो वैतयं त्याच हरेणाभिमुद्रोभितं उल्लोतेन सुपुमेन कुक्षिणा चापिशेभितं नाभ्यो
भीरवारम्ये विधेये त्रिभुक्तं तं उजरीयेन विराजते संज्याम पानिभेन च कस्या सुमुखं धारयति तं वदं प्रणेभया कदा
लीखं मह्येन स्यामपि रूद्रेयं च जानुपुमेन जंघेनरमया लातितेन च मुक्षिप्रदेन दारुणैः पादपुमेन शोभितं
मणिनिभित्कोदंडं धृतं वामपाणिना दक्षिणे च तच्चावाणे स्वणे पुंसु मनोहरं चापद्वयेन शेभितं पृष्ठभागो मनोहरं
कस्तूरीभाय युक्तेन चंदेन विलेपितं कोटिगन्धलावण्यं सुंदरं पुनंदं लक्ष्मणेनापिशेरेण भूषितं तथैव स
व्यमानसरोत्तनसिंघर्तनं वं पुना परात्परे परं ब्रह्मस्वरण्यं सर्वदेहिनां आरणागतभूतानोपालनाय सरोद्यातं सौखी
ल्पादिशुणैः युक्तं वात्सल्यगुणसागरं कोटिकंदपेलावण्यं स्मितपूशोभितायितं सर्वपश्यतीताः सर्वो जनकस्य पुरस्विच
रामे च लक्ष्मणे च वज्रामातृ सुखबोडया मुकुटारामिरी संल्यः सस्मिताश्च वराननाः द्युवभावच कुर्वंतो राममोहाय सल
रं कविद्रमं निरीत्येव ध्यायमाना मुखो वुजे मुकुटं कुश्रनिः सांसुचमाना यतस्ततः काचिदेव ध्यायमाना रामदंडा
मनोहरं कामाहृतिः कुमारोयं सुंदर्यो ह सुमानं सकांते सुखसया यां कृताव सल्लले सुसुं ओष्ठपानं कविष्ठापिणि
भ्यो ह सुमध्यं काचिद्रमं च पश्यती कणे च के सको गुली पयोधरे पीतमंदरो यती मुकुटं कुः कोटिता रामरूपं क

चिदेवचकारसा अलकांश्च निरीसतीनां शुभमुक्तं पुनः पुनः कंचुचं रश्यामास सग्रे सुखेण गतितो मुक्तामाला पुनः कंदे वा
 चोत्थापयसमुत्से तस्मिन् समुखे काचिदपि वदन् च सुपा उभयनीवी वप्रतिपाणिना लक्ष्मणपतः नृपुत्रववधाय पादौ
 रत्नश्रीलितं करादेशी निरीसती देतं पत्तिरुजितां काचित् मल पुण्यं च पाठयामास पाणिना काचिद्वालिगती बालकुं
 से मेत्य पाणिना स्वपत्रं प्रतिताः सर्वाः किशोरो राम लक्ष्मणे मुनेन्द्रा ज्ञानदीपे वनिरीस्यं मुदिताभवत् विश्वामित्रा
 शिषश्च लब्ध्वा जग्मुश्च मंदिरं भोजयामास रातापि बालकैतामुनी रपि तादृशं च ददावाय सर्वेभ्यो राजसत्तमः संनिवेश
 जगामाथ कुमारभ्यां महासुनिः रथ्या सुराजमार्गे पुवी ॥ इत्यारं मुदेययुः नराना र्यैश्च राजा सत्याहृदकुमारकाः ४६
 इति श्री सत्योपाख्याने स्तुतौ न क संवारे षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥ ११ ॥ श्रौत० उ० विवाहं रामचंद्रस्य सत्तुष्टिमुत्तु
 मते धनुर्भंगतथा श्री प्रेश्रवणा मुक्तिरुत्तु १ सूत० उ० ततो राजा विदेहानां दिवं सेन्येयं सामाहृत्य वंदितः कर्मोत्तिका
 न्तर्वाचनं चैदमब्रवीत् २ राज्ञा च शिविरा गन्तावध्वं वचनानाम् रंगभूमि गच्छेत् ३ सत्तु
 तैगत्वा राजा शिविरान्मुवन् वचनं श्रुत्वा गम्यतां राजा शरैलायत्र बाधो व्यतिष्ठति ४ तच्छ्रुत्वा भूभुजाः सर्वेनागराश्च
 जनाश्च मे स्थितो बालास्तथा वृद्धः प्राप्तास्तोपापसन्निधौ विश्वामित्रोऽपि मुनिभिः कुमारभ्यां तथैव च मिथिलापि
 पतिरीजा यथा योम्यनिवेशायत् आगते पुनरेषेव मुवाच कर्त्तव्यं वचनं नृपः श्रूयतां मे पुण्यलोकान् धनुर्भंगं करोतु यः
 तस्मिन् सीतां प्रदास्यामि अथैवा विधिना पुनः सत्तु ३० इति श्रुत्वा जनाः सर्वे प्रत्युत्तु रपति तदा ८ इष्टपरा कर्मो राज

शिव०

१०

स्त्वेषो भूभुजान् यः अधुना दृष्टीनीयेदिरामस्य च बलरुदे २ तेषां तु वचनं श्रुत्वा विश्वामित्रो महा तपः उवाच रामसु
 प्रीतश्चापमंगं कुरु प्रभो इति श्रुत्वा तदारामः प्रणम्य मुनिपुंगवः बापस्थानिकं गत्वा तद्वा वाक्पमया ब्रवीत् इदं पूर्ववत्
 विप्रमहोदयस्य विश्रुतं पुराणं वक्तुं कालीनं मध्यतार्णं न संशयः इत्युक्त्वा माह सैन्यं गृहीत्वा धनुर्भुजं सुसनागमिषो
 त्वाय येन वृष्टीकृतः पुराः ज्योत्समारोप्य सदसि तेषां यत्र तं नृणां बभूव मध्यतार्णं श्री प्रपुष्पापमिवास्तु २ तस्य
 ब्रह्मसूत्रासीद्द्विषिरा सैन्ये जनाः केचिन्निघतिता धूमोके चिश्चि वचं कपिरे दिवि उडमयो नैः पुष्पहृदि सदा भव
 त् तदा मे व्यीरवाद्यंत जनकस्य महात्मनः तदा जयजय पारावोजनैरुक्तो बभूव ह राक्षसाकारिता सीतां तारयामास प्र
 हृष्टा सा राजदृष्टी गच्छतीति वारपभूषणानि च आगत्य रामकंदे तु हस्ताभ्यां निरधेस्वजं नागराश्च तदा सर्वे बाल
 वृद्धाश्च स्त्रियः शाला विवाहं रामस्य सीतायाश्च मुदेययुः वधुमुत्तु मलिना उष्टा राजा कोयसमागताः उत्थिता
 आसनेभ्यस्तु गताः दिशः शान्तकान्तकान् २० रातापि जनको हृष्टः मुनिना राम लक्ष्मणे गजमारोप्य नगरं प्रविशे शस
 सेनया दंदोदानं हिजातिभ्यो सीतां पदपूषणेषु च गुणिभ्यो याचकं भ्यश्च येन तत्र समागताः गृहमागत्य तदा तुरा म
 चंद्रमनोहरं गजादवतरद्भूमौ दत्वा हस्ते स्वपत्न्यः निवेशयामास गृहसंकारे पूजितो वसत् तद्दिनं तस्य राजी चम
 हानं देन सागता २४ ॥ इति श्री सत्योपाख्याने स्तुतौ न क संवारे षट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥ ११ ॥ सत्तु ३० ततः
 प्रभाते विमले सूर्ये च विमलोदये मिथिलापि पतिरीजा कृतपूर्वोक्तं क्रियाः १ विश्वामित्रमुपागम्य वचनं चेदं

नृपः ३४ एवं चालभूपालः सेनया गजशोभया पथिवाम्नां कतिपयां कलाकोशलभूमिपः ३५ मिथिलोप्राप्यते
जस्वी जनेनश्च परिवारितः प्रासोदेवैर्द्विपेरेभ्यः जनेनश्च समलंकृतः ३६ इति श्रीसत्यापाह्नाने सूतश्रीन कंसोदय
एवंचात्राजमोध्यायः ॥ ५८ ॥ सूतः ३० श्रुत्वा तु जनको राजा प्रनामि ब्राह्मणेः सह निजैर्गामान् नृपेनेतुं सपुरं प्रतिमिथि
लः १ अश्ववोरमेतं मे श्रुतिविक्रमि समन्वितः निर्गम्य मिथिलायां सुहृदशुः पार्थिववर्षं वृद्धं दशरथं हस्तामुभो
दजनको नृपः गच्छादुज्जीर्य राजापि वशिष्ठारिभिर्नृचिः २ तस्मिन् भूयामहाराजः सेनिकैः परिवारितः जनककुलम्
हाबुद्धिर्नृपस्य चरणोत्तिके ४ प्रेक्षाननामं वैराजा कृतो जलिनं मन्त्रके तदारश्चरथो राजा दोर्भ्यां तं परिपश्यते ५
कुशलं परिपप्रच्छ सन्यानपितृथेयवत् जनकस्तु तदारश्चरथे दशरथं नृपः ६ सारथ्यतां सयं चैरये स्थापयत्ये
नृपः गृहीत्वा ह्येवराजानं नृपस्य बांधेः प्रहर्षितं ७ पुरं निवेशयामास नानासंभारशोभितं सेनानिवेशयामास पु
रस्थनिकटे नृपः ८ पटवंदमानो ज्ञो भूते सहस्राणि जनेः सह उवास ते पुष्पमौल्यो सेन्यैः सह महामतिः ९ जन
कोपितमामेन्यपौरैः सह गृहं ययौ नानाविधानि चान्धानि दृष्टिं नृपेन युतानि च १० प्रवयामास राजापि सेनि
कानां भोजनानां च सर्वो सुसिद्धयस्तत्राज्ञया जनकस्य च ११ सेनैर्नृपेनिकंस्तत्र नानासंभारभूतिभिः राजा
दशरथस्तान् विस्मयं ययौ स्वनाम वृ १२ योगिनोऽङ्कुरं नैव जनको यंतु योगिराट् सतस्मिन्नेतरे विप्राविक्षा
मित्रो महामुनिः १३ सौमित्रिणा वरामेण श्यागतो नृपसन्निधौ सेनिकान् तदामहं लेभिरपरमाहुतं १४

शिव-

१२

ल

विश्वामित्रमुनिवीर्यतथा तोरामलक्ष्मणौ आयांतु मुनिवीर्यस्तथा तोचक्रमारकौ १५ उद्याय जगदेह पादो विष्णो
मित्रस्वराजराट् आतरो रात्रा तस्य चरणो जगह तु मेरा १६ पुत्रो स हृष्य राजा जदोर्भ्यां कृतत्वा च सति स्तोपयामा
स प्रेक्षो जनेन त्राभ्यां वारिधिमिः २० मुनिपुत्रो सौमित्रेण जगद्वपसतमः रूपयात वधिं प्रदसं वधोऽहं शोभवत् २०
परोपकारिणः सर्वे साधकः समदर्शनः विश्वामित्रः ३० भाग्याद्गम्यतां धृतिः सर्वैर्देवकिल जायते २१ पुत्रो गृहीत्वा
जेद्व्यासं सुतोत्तमोपैतो सर्वैर्प्रमुदितलोका राजा चापि महामतिः २२ सतस्मिन्नेतरे विश्वसतानंदो महामतिः जन
कानुमते नैव वाक्चैरमथाश्रयोत् २३ सतानंदो वाच राघवं द्रमहाराजं सुप्रैकृत्वा कुमारकां च गम्यतां संश्रु राजो
विप्रेनो गच्छेत् सह २४ कुमारान् पृथुया मासं पृथुगैरलभू धितः सैतारुद्रश्च तान् कृतत्वा चालनृपतिर्हितः २५ मि
थिलायां नानासंभारनरायो मरप्रभाः आपतं तं नृपं श्रुत्वा विवाहाय सुदयं युः २६ दूरीनायकुमारानां गरीणां
यतस्ततः हयोवधुवतां पूरुं हर्म्योण्या रुद्रं मेरा २७ आलोकनाय रामस्य काचित्पुत्रसंभारः २८ धर्मिलेन वधो
यपुष्पायैर्पतन्यतः २९ ओषिप्रसाधिका यातुकरा दक्षिणसत्वरं गवासायुज्जतीत्यायावचिन्तसती यतः ३०
काचिन्नेत्रे च संभास्य जनेन सत्काया इति यंच वयं यत्नातु वाताय नमुपायं यो ३१ वाताय नेदेदोऽपि नीवीना
पवत्तु पथा अवलं व्यकरणे सांतेत्यो रामे वीर्यवती ३२ सतीनां वधो यत्नाय काचि दाला प्रसपैती परंपरेतु भूयाम्नां
पाताया मासु चेटिको ३३ तासां मुसेश्च ब्राह्मेणैवासां प्रीतिर्भवत् पश्यत्कलेरमानां यैकोटिकं दपे सति ३४

स-उ-
१३

धर्वराजप्रतिमां मिद्रीलमणिप्रभं मस्तकेमणिमुच्चनो विभोतोमालिमुनमं ३३ शीघैल्लादेदेओच ऊर्ध्वपुं मनोहू कु
उत्तमकराकारं अलकभ्याचक्राभित प्रेवेयंमणिमुक्तानी मुरसाचमहामणि ३४ केपूरकिलरत्नानादधतंभुजयादोषो
प्रकोष्ठयोमहादिव्यंकणोत्तरशालितं ३५ अमृत्युप्रेरुलीभिश्चनानारत्नश्चक्राभित कंचुकंमहादिव्यंरूपंतेषाम
विग्रहे ३६ उपानंहीचयुग्मनश्चोभितं पादपंकजं दृश्यः ताश्चश्राभमेलोचने कणविस्मृतं ३७ ॥ इति श्रीसत्योपा
स्थानेस्तुतोजोनकसत्तारेस्कोनवष्टितमोध्यापः ॥ ५९ ॥ स्तुतउ० ऊचुः परस्परं तालाः रामोत्तलप्रमानसः जनकेनैषतोर्ध्वतो
कृत्स्नं धनुषस्तु पिनाकिनः कथंरामः सभायाति यदियज्ञो न जायते रामो नारायणः साक्षात्सीतालक्ष्मीप्रियासती २
कथं दृष्टोति सीतान्य प्राकृतं तु न रं दृष्टा रोहिणीवत्सलोकं सा तथा राममनुवृता १३ रामचंद्रस्य सीताया विवाहो मेव जा
यते मूर्ध्वलं ब्राह्मणलोकं जायते ब्रह्मकालिकः ५ नागरीणा तु वत्सपश्च न्यनाति कुमारकाः भ्रातृभिः सखिभिः साई
पित्रा दशरथेन च ५ नृत्यमानैर्नरीसैर्कीपश्र्यतो याति राघवः ५ नदीसागायती गीतं तथा शृण्वति तेजनाः ६ रामस्या
प्रेम्बमती नो जानाहास्यं प्रकुर्वते राममायावर्लेनैव सप्यनित्यं धर्मति च ० इत्यं दशरथो राजा राघवे सत्यैः सह सं
धिनोत्तनकस्य द्वारे प्राप महामनाः ८ शोभितैर्मण्डुली सर्वा विदपौ दस्तया धूमैः द्वारे देओ विनिर्गत्स जनकस्तुनैर्यशः
६ महत्या पूजया रामं पूजयामास हारः ७ जनस्तु पुत्रो वैनाम्नालक्ष्मीनिधिर्महान् १ महता बलं वनं दत्ता गता श्री
ममरोपयत् तथैवा न्याकुमारान्वेत्ता दशरथेन ११ जनकेन विनिर्दिष्टं चतुर्कान्त कुमारकाः विविशुर्भूषिता

शिव
१३

लेतु प्रणम्य शुरुदेवताः १३ परिनिवशितो रामो नारत्नविभूषित जग्राह मधुपर्कं च राक्षसं च राघवः १४ बस्त्रदये
च श्रीभो वनिता नो विलोकेने जग्राह मंडपे हतं भूषेनैव महामनाः १५ पुरोधास्तु विदेहानो सतानेरो महामतिः २
नो च वसिष्ठस्तु तथैवावेष्टिता तयः १६ अभिमाज्यादिभिर्दत्ता तैव सास्ये निधाय च सीता कन्यासमावीय विदेहः प्राह
राघवं १६ इयं सीता वरारोहा लक्ष्मीस्तु परिग्रहः भवानारायणे देवः पत्न्यर्थं प्रतिगृह्यता १७ हसेन हसं श्रीरामः
जानस्याजगृहेतदा श्रुत्युभे च तदारामः कामो रत्येव मंडपे १८ संशोन किल सीताया रोमोर्ध्वस्तु राघवे राघवस्य क
रस्य शूरीतायाश्च बभूव १९ तयोर्दिलोचनान्येव लज्जा प्रापुः परस्परं व्याजेन होमभूमस्य यो नो वषणिमेषां २०
बभूव वरवधोश्च मंडपे जनसन्निधौ पश्चाद्रामश्च सीता च सुप्रिचैव प्रदक्षिणं २१ चक्रतुर्द्वाराणां गुरे सते त्वमुद्र
मुद्रः सताने देव सा प्रोक्ता जानकी पाति देवता २२ कृताशने च लज्जानिजुहाया पोमुखी तदा दृष्टिषां पक्ष्मनां च गंधो
मिश्रीव भूव २३ धूमः कणोलस्येव प्राप शोभां च समुत्प्रे वरतं जानकी देव्या जननक्रे दमावभौ २४ ग्रहणाद्वा
मधुमस्य ययो पाठलता तदा कन्यावैरो तदा सर्वे संस्थाप्य कनकासने २५ ब्राह्मणाने गमादेवाः सन्निधा पुरतोऽसि
नः अभिवेकं तदा च कुः वरवधोः सुमंगलं २६ सतस्मिन्नंतरे राजा आहूय लक्ष्मणं पुनः उर्मिलां च विधानेन लक्ष्म
णा यस्य देहो २७ भरतं पुनराहूय मांडवीं दत्तवान् नृपः कुरुध्वजस्तुतारं रमां श्रुतिं कीदृशं विश्रुतां २८ शत्रुप्रायं ह्ये
राजा विभिनो बलशालिने सर्वे दत्ता कुमारीश्च श्रीस्योत्तमो नराधिपः २९ परिवर्द्धं देहो पश्चादसंख्यं मिथिलाधिपः

नि

सं०-
१४

त

तेषा

पश्चाद्भामः समुत्थाय सतानंदस्य वाक्ताया ३० विमिश्रितः पुरे वीराभ्यात्तुभिः सह राघवः यत्र देवालयो राक्षानि लुप्तकारतस्य
च ३१ लक्ष्मीनारायणस्यापि प्रतिमा यत्र विद्यते तं प्रशम्य यथा न्यायं स्थितं तत्र कुमारकाः ३२ ॥ इति श्रीसत्केयाख्या
नेस्तुतयेन कसंबोदयवाहवर्णेनोनामपण्डितमोधायाः ॥ ६० ॥ सतु ३- आसेने पुत्रद्वये पुरे जुलुत्रकुमारकाः राजराशौ
समाजाम्पुत्रे च रामादप्युत्थिताः १ ब्राह्मणीतचरद्राणीद्वेद्राणीसारादताद अन्वयितो कपालानोत्थियस्तत्र समागतः
२ आजगमुभूततः ३ प्रवाक्यचकुमेनोरमं च लघुविवापरास्तत्र रामायेभावदशिकाः ३ भोजयति कुमारोश्च मधुपर्कं
तथैव ताः तासां मध्यासमुत्थाय राक्षसीलक्ष्मीनिषेत्तुया ४ नाम्नासिद्धितुसाख्यातास्तस्यैयस्यास्तिसास्तु बभूवुनक
राजस्य प्रिया लक्ष्मीनिषेत्तुया हरेण प्रतिमालोके सवोभरत्तुयिताः आगत्य रामचंद्रस्य तस्थौ प्राज्ञतिरग्रतः उवा
च सस्मितारामं नतं येति विलोचने पीतांबरं प्रकृष्यान् पाणिना स्वेन निस्त्रिधा ८ सिद्धिरुं राघ्वचंद्रमहाराजस्य श्रुतौ
वचनं मम नन्दो मम गृहीताते सीतानां भीरवानना ९ किंचित्पूजाम माधिष्ठादी यतो राजपुत्रक इत्युक्ता वीरिकादि
व्योदेयो रामाय सुंदरी १ लक्ष्मणाय च शत्रूणां हर्त्रे वैभरताय च पुनश्च प्रार्थयामास मम प्रज्ञां प्रदीदृष्टुमा ॥ मास्तीतीवर
नं मे चलेन श्रुमाननां न हस्तु तौ कुमारौ रक्षितुं इदं न स्यात् इत्याहुवदन्ते तेषां मोहमापवानना जगदसस्मितवाक्यं
देहि प्रजोच मां मेरी ३३ तेषां तं गेमिष्यामि तव रामपुंरी प्रति भूत्वा च संवकोनो चेन्मदीयानगरीं बस ३४ नन्दो
मम गृहीताते उर्मिलायाश्च भ्रातुभिः तत्प्राकवर्षं समाकल्यै सस्मितारामं बोधिताः श्रीराम उ- उवाच रामचंद्रोऽप्यतव

शिव
१४

जेहसाम्यहं तेव कोन भविष्यामि वये सत्रिय पुंगवाः १६ योगिनो जनकाः सर्वैरुद्धिसिद्धीदुपासिकाः वयं तां सांतु मोक्ष
रुमिद्धि लाचनयाम्यहं १७ असिद्धिरुं एवं भवतु भोशाने च त्वदासी भवाम्यहं पूतो देहि मदीयं बालं नन्दो मे विवाहिता १८
श्रीराम उ- वस्त्ररत्नसिंघ्यादिभूषणं गजवातिनः रथश्च विविकादिभ्याः बाह्यासीया प्रपूर्यतां १९ इत्युक्ता राजपुत्रे
ण सिद्धिप्रोवाच राघव सिद्धिरुं देहि भक्तिमहाराज मम मेतुं तथैव हि २० यथा भक्त्या भविष्यामि तदीयात वकिंती
सतु ३- तच्छ्रुत्वा सारोदेवी सती तस्याभ्यनोदरा २१ उवाच रामसेल प्रावीजयती मयि संभुजम् सारोदेवा च अरुमपा
गमिष्यामि सीतासंगे पुंरीतव २२ दशोवायं च राक्षसीनां युष्माके याश्च मातरः सतजनकपत्न्यस्तु मंदरासाः पत्न्यः २३
गौरोदशरथो भक्तो ज्ञात्वा श्रुत्योतेतया कथं स्यामो भवान् पीतः संदेहो नो जपाकुः २४ भवान् नारायणो देवः स्याम सुंदर
विग्रहः लक्ष्मणशेषरूपश्च भरतः शेषरूपधृक् २५ शत्रुहृत्वरूपश्च मया देवविलोकिताः सवन्तं भुवती बालाकु
माराः सस्मितानना २६ आपो गेवोरयामासुस्तो मे वजनं संसदि इत्या रामे तु ताः सवोः नात्मानं विविदुस्तुताः मोहिता
महोषणाभ्यां न स्हादलसिताः सतस्मिन् तरे बालाविदेहो मिथिलाधिपः २८ विलोक्य रामचंद्रं वदेह च बुधुपे नृपः
पुनरुत्थाय रात्तामुदेरी मध्ये च तस्थिवान् २९ महाराजं दशरथं वसिष्ठादि सन्निभं रामाद्यैर्बालैः सर्वैरपूजां प्रवे
सत् ३० नेमो मे कुलहर्दैश्च भोजयामास धर्मवित् शायति गालिकात्तत्रां योर्पारससया ३१ चतुर्विधं सुधां चैव
भुजुः सत्रियवर्माः भुक्ता वम्य यथा न्यायं ब्रह्मन्याया यविग्रहे ३२ रामादयस्तु तं सर्वैश्चि विराय विनियेयुः ३३ आजगम

विरोदात्तावधूमिस्वहपुनर्के १३ द्वादिदानेद्विज्ञातिभ्याचर्कभ्यः पुनः पुनः ॥ ॥ इति श्रीसत्योपाख्यानेसूतत्रयैकसंबादेष्ट
कषष्टितमोऽध्यायः ॥ १३ ॥ सूत उ० उपित्वेवैराज्जातुनानिकतिविश्वेन अयोध्यापुनरागंव्युपयजेन्नकचपे १ तच्छ्रु
त्वाजनकेशनागजानश्यासमादिश्वः कंवलान्मणिमुज्जरीकृतामानेप्रोक्ष्णोऽपुः २ रामोऽप्राप्तयाप्रापयश्चर्यानि
दंयुयो उवाचप्रणतोभूताश्चर्यासर्वोः समाहिताः ३ श्रीराम उ० आसीदेष्टिमहाराजअयोध्यागतमीहते अहं चापिगमि
व्यामिधातुमिः सहितोपुरी ४ एकप्रमानसेनैवममध्यानेकीयता भवतीमिः सदाचितो उपकेदेवस्वमहं ५ धर्मेतत्त्व
पुत्रोहं विस्मरंतुनमोक्षचित् मां च ध्यायेति येतोकातेकृतायोनसंशयः ६ तच्छ्रुत्वा राजा राक्षस्युविचायेमनसासिद्धे
चतस्त्रकन्यकासासुसंभूषयुषणात्तमैः ७ आलिंग्यमातरः सर्वो जानकीप्रमत्तो मुहुः मोक्तुं नैष्ठिकृत्तयाः विभेग
भयकातराः ८ वेदेद्वित्वप्रमेदमीश्वरेस्तुस्तुतंकिल देहांतरेपिदृष्ट्याऽऽप्राप्तात्तं वरानने ९ विश्वकर्तुरियंस्थि
बंधुसंयोग्यामैदतः न च जानाति कस्यापि डोचापिवियोगता १० आत्मतुल्यः पतिः प्राप्तस्तयाहीतेन संशयः
आत्मिस्तुनशोच्यासि सर्वदा प्राणवत्तमैः ११ विरहं दुःसहं सीतेस्तुसाकंतेवियोगजं सुदिनं वतं तेतेषां यत्र सीता
मिष्यति १२ जनक उ० मंगलं कीयतां तेषां देवैः सीतायेविधिपूर्वकं इति श्रुत्वा तदा प्रोचुर्वेदेही गद्गदसराः १३ चि
रायुर्मेव सीतेस्तु रूपया श्रीधरश्च च शिवो गौरी प्रह्लादेन शोभायंते विवदं १४ वामभोगो तुराग्रस्य सदातिष्ठ वरानने इ
त्यादिवाशिष्ठादेवता ऊचुरामैवमातराः १५ मंगलानि प्रकुर्वंत्यः प्रमणावाश्रुतोचर्चनः सुकुमारी च सीते च सुहृदं च मु

णान्विताः १६ पित्राचलालितानित्यं परिचर्यां करिष्यति यद्विचित्रं पराधंतुं देहात्तयास्तियं १७ हृदयेन तु मेतज्ये
दासीते चरणोऽयोः जनकेन च ते तदा धर्मे पत्नी सदा तव रूपेणेन सदा सिंघानित्यं सिंघनामन यदा यदा तारं
ते जायते भुवि मानवे तदा तदा स्ति यं पत्नी जायते नृपनेदनः २० बांसेरिह्वादि संतोष्य रामेन प्रामाणां तं तु सा दत्तावह
निरत्ना निरामाय पियं कारिणे २१ चतुरस्रो भुवो देहात्ता स्वर्णरत्नविनिर्मिता सीता मां रोहयामासु रुरेतीत्याश्चमात
रुः २२ अंबवत्सेति नादो भूज्जनविश्रवः २३ कारकाः उर्मिलोऽयुतिकीर्तिचमोऽसी
चापिमातरः २४ पानेपुरयापयामासुरालिङ्ग्यालिंग्यसारं सुभगादयस्तु रुरेतीत्याश्चमात रुरेतीत्याश्चमात
लाधिपतिर्गोतावराभ्यानां शिरोमणिः सर्वरत्नाचरामाय रामं हृदि निवेश च २५ राघवेर्देवप्रणम्याश्चामनादिदेव
प्रयाणे चैव रामस्य मिथिलापुरवासिनः २६ परंपरामायते सर्वे श्रुत्वा कंजावधूविरे बालाहृष्टपुत्रानश्नत रुण्णो ध्या
नतत्पराः २७ इदं भीनो प्रणंदनमाजानां वदंति तदा हृष्टिते श्रापिताश्चानोऽंति पौहस्त्येव च २८ रुहितानि श्रु
प्वंति न रागायैः परस्परं केचित् सीतेतिहा च कुः हारा मेति वदं मुहुः २९ एवं ब्रुवन्तु सर्वे षु प्रचचारं पृष्टुः नास्वा
शुभं जयं नाममाहरोहनराधिपः तेष्वेव रामो मतोत्ताश्चातुभिः परिकारितः बलिष्ठादास्तथाविप्राः जागरासीन् योस्तु
ते बधूनां तानि यानि मध्ये कृत्वा प्रतस्थिरे तस्मै रमीलनेनैव मिथिलापुरवासिनः प्रह्लादं वंदुं प्रायते तस्मै नमो
नलेभिरे ॥ ॥ इति श्रीसत्योपाख्यानेसूतत्रयैकसंबादेष्टितमोऽध्यायः ॥ १३ ॥ सूत उ० अयोध्याप्रतिसेनाश्च

च

श्री

शिव

१५

वियोग

गामपरयाश्रिमा दुंदुभीनीं प्रशाशश्च श्रूयते तज भूरिशः १ बंधूनां तानि यानि हे प्रानि प्रचकाशिते भालेव को
चनो भूमा ध्याने पतिः पिराजिते २ चितानि तु मेधा नो बध्वुर्व्रजं तो पथि मंगलानि प्रदश्यते यत्र तच्च भूरिशः
३ जमर प्रेक्षार पुत्रः सजि यथा कुलोत्तकः नाभा परशुरामश्च रामरजो न कोत्तिराः ४ जेवा बाग लरामे
तु पञ्चकीरा धरु प्रभुः परशुराम उ० रामचंद्र महाभाग धनुर्भोगं लयाकृतः ५ विश्वासं ते न मे जातः रामो न राय
णः स्वयं उदं धनुर्वरं रामविस्तारं मते न सं ६ गृहीतं यो भो महा राज परोक्षे प्रणयाम्यहं अथ रामं प्रसा म्यामु
कामुं कं जगृहे मुरा ७ कृषि प्रसार माभाष्य रामो रामे सुदेवत रामे च सीतया सा ईदृशिवै स्वयं यो मुनिः ८ रामो
पिसेनया सा धृराज्ञा रशरयेन च अयोध्यां च जगामा यने दृश्ये उले भुवः पुनः सा ईदं महा राज मायो मे मे वि सति मः
पारे निर्गम्य पुर्णोत्पूजया तम पूज्यन्त ९ मंगलानि प्रगायंति नृना ये सुभूरिशः वाचमाने बुद्धये पुस्त्यमाने पुन
दिषु अयोध्या नगरे रस्य नाना रत्नेश्च मंडितं वैजयेती पताकाभिः रजिते बद्धो जने १० उत्साये शिवि का वस्त्रं भीमो
भिस्तु जानकी प्रसोमम करोत्ये म्याये कुंठेति हरेः पुरी ११ बीणां वेषु मृदंगा नो हरे राणां च भूरिशः शोख दुंदुभिना रं च
गोमुसा नो नैव च नारिते विविधै नो हरे सुदेव पुरोपमं बाल वृद्धा स्तरुणी श्रह्मणी ष्या रुद्र रुद्र स्तरा १२ गजा रुद्रं
हारा नो राजा जे चरा घवः रुद्रं हारा यं हृष्टा प्रससंति नरा जनाः १३ ऐरावति कुले जातं गजेन्द्र पर्वतो पमं नमो रु
समायाते छत्र चामर रजोभिः कोटिकं दर्पला वण्णं रामचंद्र मनोहरं भूषितं वर वस्त्रैश्च तथैव वर भूषणैः तथैव मर

श्रीशिव

१६

ते दीरं मन माते गगामिने लक्ष्मणो राज नु हं तारे नो गनागे विराजिते २० राज पुत्रो लया रत्ना स्थि यो बालाश्च कन्याः सु
काभिरस्ते पुष्यः किरत्यो गीत मुञ्चतु २१ धन्याः जभुवं सेलो का ग्मिथिला पुरा सतिनः शोर्म विलोको ते रामे न यत्रै
कर्ण विस्तितः २२ धन्या सेमा नरः सवी कोशाल्या भूरिशरा या सो पुत्रा भवेतो हि मन्मथा रदिका पमाः २३ वये पन्य तमा
सेतु सुख चंद्रावलेकिनः स्ववृष्वनुभावा च प्रपयुले कुमारकाः २४ कोशाल्या वने प्रापुः राजा स हकुमारकाः तस्याः
झासितं पय मंगले मंगल वस्तु २५ हारं चापि महा रियं सुता दामि रावतं हारं भित्तो हरे व्यूहाः सर्वे साधु निरुपिताः
२६ ब्रह्मायां सुकलोदराः स्विपो वै कमलारयः हरे तस्मिन् विराजते मंगले हंस प्रतिताः २७ कोशाल्या च सुमित्रा चैके के यी
यंति सन्मुखे २८ विलोका गीते गायंति रामचंद्र मुद्रुं ऊः राजा स हं से सभा मध्ये धनुर्भोगं लयाकृतः ३० तेषां मान मया
कृत्य सीता को दाहिना तया प्रतिता जनक सेव प्रतिता राज नरेन ३१ प्रहृष्टो भागवने वकीर्तिलोको विभुता सया प
त्न्या चिरं जीव वई य स निजा नृनाना ३२ स्वर्णी राज नं कृत्वा रदरी नायै कः अवेत रुगे ने भ्यस्तु जननी भिस्तु पुत्तिः
३३ यो ने भ्यस्तु तया वधः जानन्या यारवात रत्न तासा मुखा ये मा लो सश्च रत्ना निता रः ३४ बंधुभिः स रिता सा सुदे
वागारं य पुपुनः तं प्रसा म्य यथान्या ये श्रु श्रु प्रनर्ताः ३५ प्रवराणां विभुता न स्थाणां बहिल योषितां प्रमुरा
धनी पत्रगुरु पत्नी मनसिनी ३६ तासां पक्षे प्रसा म्या य विभुता वरा सने स्तस्मिन्ने तरे राजा रत्ना रानि भूरिशः ३७

सलो०३०
२८

सकदारामचंद्रसुरानराजेश्वराम्जः ११ सीतयासहपासादेनारुहमुरान्वितः पर्यंकेतुमहारिष्यमुक्तदामविराजि
ते १२ प्रयत्नेनपथेभ्रमिषस्तादेतयासह जीजयामासामेवचामरेणसुविस्थिता १३ तांबूलसारायामासुग्रीफ
लपुतेतदा उवाचामपवेसीतागवाद्याम्यश्रुतापुरी १४ सीतावच अयोध्येपुरीरम्यानावांसेश्वरोमिता सरू
इत्यतेयचैवेकंविजयायथा १५ वैकुण्ठस्यमिरसेचैकोरिपुण्यश्रुतम्यं भवान्नारायणोदेवः लब्धोवाहेप्रियातव
१६ अन्वासाद्विनामीमोवैकुण्ठस्यापुरीत्यय इत्येवमुवतीसीतासूर्यश्राप्तिमिरपेक्षी १७ प्रहृत्तारजनीशुक्लक्षणा
सर्वदेहिना रामःसीतामुवाचायदस्ताचंद्रनिमानतो १८ श्रीरामउ० सीतेविलोकातोचेद्राघीभोगमनोरसः उदितं
वेलोकांतातपनाशायसुरि १९ ईकंकुमुदिनीनातुफोरपन्यरितः प्रिय इत्युक्त्वाजानकीरामआलिलिप्यप्रियानितो
२० तयोर्भोगेनसंजातेजगदेतज्जराचरे पुनःप्रोवाचसीतांसःसुवन्मोकेमुंडमुंडः २१ वदनंचंद्रतोम्यसीतेपश्यामितुं
गदूरे २२ गमनेतेनसंप्राप्यप्रतंगाःदिश्याताभवत् पंकनानिजलेनम्युर्नैजशोभानेतिमेरे २३ विलोक्यभुजगाविलोपु
गुपुरंदहंवलविले सतींदराहवाक्यानममोदेहंवलोकस्ते २४ सतामिदंप्रियेयोह्यंदेवसाःपरराजये इतिश्रुत्वाशुभ
वाक्शरामवक्त्रात्सीतारिते २५ सीमितावीक्ष्यतीरामंपांगेश्चास्माकमवलम्बे श्रीजानक्युवाच अहेरासीमहाराजयथेक्ष
सितयावद २० परंतुसुरीसीहापित्युराज्ञाकरुचिया पतिर्वेशभवेयस्यापतिवश्याचयाभवेत् २२ उभोचसुखम
धेतेह्वेतानीहिभोप्रिय सतउ० भेजानेनशयनंतोचपर्यंकेनजवश्मनि २५ अरुणादयंबलायाजैहेनिद्रोचराप

श्रीशिव
१८

यः उवाचयाचक्रिकंरुतानगमपितुरंकिं १० तेषाम्यश्रुतान्यायराज्यकार्यचकारह तथैवतानकीदेवीरुताद्रुत
द्रुताशना ११ पूजनायैतुश्रुश्रुतंजगामगजगामिनी श्रुश्रुतंनचसंप्रत्येकीद्रुत्यानिकटपुनः १२ विवेकातिभिज्ञा
कसेकोयैवसंदोभुसी तस्याःप्राशासमासाहिनकरसुसुतासती १३ इतिश्रीसत्योपाख्यानेस्तुतोग्रानकसेवादेपव
पठितमोधायाः १४ सूतउ० मातामेवाचरामस्यसीतापरमहर्षिताः पाकेविषायमोदेविपुत्रेसहवरापिप १५
सिद्धवामदेवंचनाकालिमथकुरूप अन्वाविप्रवसंश्रिवभोजनयत्नेवरानवे २ तस्यावाक्यसमाकर्षणेसीतासर्वग
शोभना भगिनीभिस्तरासाद्वैचकेपाकचतुर्द्विविधं ३ निवेद्यदृश्येवान्वविधिपूर्वतुतानकी आकारितासुमुखवश
जापुंकेसमन्विते ४ भोजनायैतुतुतुसर्वपाकसालंसमाययुः हस्तोपादेवप्रक्षाल्यतस्याःपतिविधायय ५ संगोपा
वदनंसीतावत्स्वोपावतयानुं सगोभोत्रेविषायांनवसिद्धायेदोहिजा ६ तथैवविप्रवेभूपापचतरांदो ततश्च
हीतोवालाश्वरामायभरतायच ७ लक्ष्मणायतरासुभुशुनप्रापयतथैवसा अन्वानपिपयान्यायश्रीत्यावांन्येव
इत्यतः ८ गुरुणाप्रेरितोराजासीतायेप्रदोमणिं दंडोवपुरादतोयतीवेवाश्वमेधके ९ सेववृजमणितैयसुत
दयत् ८ गुरुणाप्रेरितोराजासीतायेप्रदोमणिं दंडोवपुरादतोयतीवेवाश्वमेधके ९ सेववृजमणितैयसुत
वेलोकेषुविश्रुतः तेमणिजानकीलब्धासुसिताभूद्रावना १० तदातुभोजनचक्रवर्षिसिद्धायालुरापवः तत्तलेप
रमेसाद्वैचकेपाकचतुर्द्विविधं ११ मुक्तापीलाचपानीयविश्रुतेसमाशुभा पुनस्तुभोजिताःश्रुश्रीसीता
श्रुसीतया १२ श्रीताःसर्वजनांत्येमेगलानिपचक्रिरे त्वयस्तुभुजेसीताभगिनीभिःसमन्विता १३ सीतायाः
पाकमदनंतरापूर्णविराजते प्रत्यहंपश्यतोमेहस्तुनपूर्णविराजते १४ यचसीतासयलक्ष्मीःसिद्धयःसीतसे

सत्यो०३०

१४

रा विनीयेतेवपापानिदर्शनात्पाकसम्पन्नः १५ इति श्रीसत्योपाख्यानेस्तुतज्ञानकसंवादषट्षष्टितमोऽध्यायः ६६ श्री
 नकउ० सुतजीवन्निरेक्षोपावरोनवरतावर रामभद्रकथापुण्याश्रवणानुक्तिरायिनो १ स्तउ० एकदशानाकरीदे
 वीरामेवचनमब्रवीत् सखाऽउत्तरेतीरेविहारयत्रजप्रिय २ भा०भिःसतिभिःसांश्चहंवाहिसुखीगोरोः गमि
 ष्यामिमहामागमगिनीभिःसमन्विता ३ स्तउ० जानक्यावचनेशुवातथास्ति तित्वरापवः प्रणामपितरंमोव
 चनेचेदमब्रवीत् ४ श्रीरामउ० विवाहेवजनाशननागतोमैथिलोऽर्चः दासारास्यलयावध्याययैयित्वमोसरा
 ५ अयोध्यापरितोयानितोयोनि सक्तलानिच स्नातुमनोहिमंरवब्रजनामस्तवरापव ६ स्तउ० काकश्रुत्यातुराम
 स्मरसावाज्ञोतारुपः हारपालानुमहोस्तीरामोवचनमब्रवीत् ७ लक्ष्मणापतदारुतो भरतायतेयेवच शत्रुप्रिय
 पुनर्वीरिनागरेभ्यस्तेयेवच ८ सैनिकेभ्योपिवाप्येभ्यो रामश्चाज्ञोसमादिशत् तैःइतास्तरितगलानेभ्योवचनमब्रवी
 न् ९ गम्यतोतीर्थयात्रार्थकुमारार्यातिभार्यया इतिश्रुत्वावचनेषांशुहासंवेदिनिर्गताः १० कोलाहलोमहाना
 सीतसंवां पापरासिनां रामो गजेन्द्रमारुतसंरगूतीरमार्ययो ११ तथोतभ्यातरःसेवेस्वसाहनुर्मथिताः जान
 कीशिवकाकूटा मांउव्यादिभिरन्विता १२ स्त्रियोवालास्तबाहूश्चानराचार्यःसहस्रशः शरगूतीरमासायहं
 पापरिप्रिताः १३ आज्ञया रामचंद्रस्यनावःसर्वासमागताः पताकिन्युत्तानावोपेदास्तनसमन्विताः १४ ना
 नानीवमुत्तातास्तुरजकंबलछादिताः पीवरेवोस्मार्त्तुपीवरीभिःसमन्विताः १५ वायंतेतत्रवाह्यानिनायुके
 लत्रभूषितैः आरुह्योवलेसर्वनयाचार्ययुत्तरा १६ अथागनाबलयाउप्रांनरावैर्युधैश्च मरुपोते

क ४

नदारामःसीतयासहसंस्थवान् १७ योतेपोतेत्यपत्त्याभ्यातरैस्तदारुहन् वासुमानामुक्तोक्तुपीवरीभिःसमन्तः
 १८ उवाचलक्ष्मणोमायोर्मिलेचशुभाननो लक्ष्मणउ० इदंसहस्रधारितित्वातेतीर्थवरागने२० पश्चिमराजतीर्थ
 तुनन्मथेपापमोचने पूर्वतःसर्गद्वाराचजाप्रातीथोक्तमन्तं स्नानार्थंचअहंभेदंआगच्छामिसराप्रिय शेषरूपोहमंमेव
 वसामिसरगूजले २१ राधयाजासदाकापीवर्षवैर्नैरुसरा पूजनयोहमंवेवलयासां देवनीपतिभिः २२ दानानिवि
 धानीहकर्तव्यानिसेदेवहि श्रुत्वावणपंचम्यांवेकायवसेदेवहि २३ नाम्नामैववर्णातचलेकेतीर्थगमिष्यति इत्ये
 वेकथयपीरस्तुरूपोरापवानुजः २४ सर्गद्वारापोरजगामप्रिययासह सगेदारसुमाहात्म्यरामचंद्रसुजानवै
 २५ आवयायासपथोन्मावन्नमोन्मावन्नमिष्या श्रीरामउ० स्वर्गद्वारमितेतीर्थसर्वतीर्थोपिकेमुनि २६ स्वर्गद्वारसमं
 तीर्थनामित्वस्रउगोलेके दशकोटिसहस्राणिदशकोटिशतानिच २७ स्नानार्थंचसमाप्यतिरेवसिद्धगणैःसह रूप
 योनाभगयस्ताश्रयस्तुकाःपन्नगस्तथा २८ नानासूत्रेपरासर्वस्नानकुर्वतिमुक्तये स्नातयंचवपस्यापिस्त्रयायमच
 जानकी २९ धर्मैवास्तिप्रयच्छामिपुण्योवासेस्तिरेफलं इत्येवेकथयामासमाहात्म्यं सरप्रभवे ३० सरय्याश्चान्
 रेतीरेलप्राचीनःसहस्रसः इतिश्रीसत्योपाख्यानेस्तुतज्ञानकसंवादसप्तषष्टितमोऽध्यायः ६७ स्तउ० नोकाभ्यसे
 तुबुनीयेनाहारुरुहःपुनः जगामसेनयारामोमहत्वाचतुरंगया १ युवकालेमहोदयार्थव्यासहरित्यरा यत्र
 बाह्येसोऽरम्भापार्वतीचेतिविश्रुतं २ ऐउशकेःमितोमोन्मन्नधारकसरोरुहः शतपत्रैश्चकमलैःकुमुदेभ्योपिमि
 तं ३ जलकुंकृतयोयष्टिःसारसेश्चापिनारितं जलजेतुसमाकीर्णपक्षीभिश्चापिनारितं ४ तराश्रमेसमानोक्तसु

याम्
ते

ति

भि

जिब

सत्या-३०
२०

मंशोराममन्त्रवीनु सुमेतउ० अनेवस्थीयतांराननुसैनिकाश्रमिकावय ५ फेणानुचंतिनाहाश्रमपुरेक्षिप्रपाडि
ताः स्वर्णमध्यारनेप्राभावासमैवकीयतां ६ देवस्थानमिदंरस्यस्थानादुक्तफलप्रदे तच्छ्रुताश्रमपुत्रश्रीमान्स्थीयतां
रतिवाग्वी ७ तन्नासर्वेजनाल्लुखुरामचंद्रस्यवात्तया इमाणांचेवल्लयासुजनाः सर्वेविश्वश्रमः ८ रामस्यचमहेश
र्वपदेवश्रमविश्रान्तिर्न सोमिचर्महत्तयापि पटवेश्रममनोहर ९ रंजिरेपटवेश्रान्तिर्नथेवपुरवासिना शोभिप्रतिष्ठा
भाभिर्विर्तितेश्रसमंततः १० राघवाणांस्त्रियल्लुखुःसरिताभिःपरिवारिताः पशितपटवेश्रान्तिर्नथेवपुरवासिना शोभिप्रतिष्ठा
११ मानेमासुराश्रमवहयाउद्राश्रवापरे श्रुस्वलेपरितोवद्गारांनेतेतवश्रुतिः १२ अजाश्रमविश्रान्तिर्नपटव
ल्लेश्रश्रमिताः हृद्वावणिऊननानातुनावास्तुभिरावृताः १३ कथंचनकिरुपेचकुलरासेन्यासहस्रराः हृदयनिकि
ल्लेश्रमनांयवतत्रविरेतिरे १४ तडगेपावेतीयचसंस्तुःसर्वेवनागराः कुमारारामचंद्रयाजानकायाश्रयधिताः
१५ ऊर्ध्वस्तुप्रतिश्रीराणां गोतपेताविजिह्वरे पुष्यान्नादापपद्राचानांम्रानुसदाशिच १६ पार्वतीसहितंनस्यचकु
नीराननंजनाः बुभुनुश्रजनाःसर्वेश्रान्तिविधिधानिच १७ रांजोजागरणचकुनैरानायेकैवधिवि केचिन्नल्लेतिग
यतिनादयेतिताथापरे १८ कथाश्रुण्वनुकेचिनुमिश्रितांहरिचचैषा अर्द्धरात्रेयतीतनुहर्सासा दभृउह १९ पार्व
त्यासहितोदेवोमणिःसर्वैःसमन्वितः उत्थायपूजयामासशिवंरामस्तुसीतया २० तथेवभानतःसर्वेपत्नीभिःपरि
वारिताः महेश्रोत्रार्णवमसर्वेषांचपश्रुपता २१ श्रीमहोदेवउ० अहंचपूजितारामल्लयाल्लोकरहितेषुषा यषश
चरेतेश्रेषुस्ततदेवोतरेजनाः २२ सत्यम्याणंकुरुतेलोकलटरजुवनेते भवान्नारायणोदेवःसीनालक्ष्मीलियेषुभा

श्रीशिव-
२०

स

२३ जगतांरणाश्रययुक्तानुररूपिणा वीर्तिर्निपावनीलोकप्रसारिष्यतिभूरिः २४ श्रोत्र्यंतियेनरात्रेवदरिष्य
तिसेवेमे पावतेवगात्रिष्यतिभवावयेश्रमतत्तराः २५ श्रीरामेतिचंतेनाममेवदारांसारमेवहि कथयिष्यंतियेनृत्तसु
क्तिःपास्यतिनेमुचि २६ श्रीरामतवनोमरेकाश्रपदप्रसिदेवाहि येयोदसामितेमुक्ताःप्रयोतिपरमंपरे २७ हेश्रीराम
महाबाहोसीतयारमयासह भ्रमहृक्मलेवासंकुलरासेमितिसेरा २८ सुतउ० उत्थमुक्ताचश्रीरामरामेणेनाभि
वारितः अंतश्रीनेय्योदेव पार्वत्याचमणेःसह २९ आत्मानस्तुमहद्भ्यंतयथामेनेरपूजेतः विस्मयचतनानुमुक्ता
यौक्तेनकसः ३० सुत्तारामरामानाथेरमारुपल्लानकी भेजिराश्रुनेसर्वैतारास्वप्नचलेमिरे ३१ परंरुसुपरेपापन
गतोकारणेपरे नाशमशाय्याशयानेवदिनुनेरपुनदने ३२ शिवब्रह्मादिर्भिर्द्वैतेतगकुडारिभिः स्तुपमानंतगन्नाच
सीतोवापितथाविधा ३३ चरेणोराभदेवस्यमाणिभ्यामुद्भूतती हि याकीत्वीचसावित्र्यामुबारुत्थातयोमया ३४ स्तु
यमानांचेवकुंदेसाकेतास्थेनशतदे तनेवतुतरात्मानंदरुश्रुःपुरवासिनः ३५ रंतिश्रीसत्यापारुगोनेसुतेशोनकसंसा
देष्टुषधितमोध्यायः ६० सुतउ० अर्द्धयामावशिष्टांराश्यांतेवाच्यवादसुः आनकावाच्योमासुगोमनायतरेत्तराम
१ तच्छ्रुताविजकुःसर्वेनिश्रोतंद्रांचेसैनिकाः पशिकैकावशिष्टांराश्यांतेवाच्यवादसुः २ उदारयश्रुसाःसर्वैरामस्य
स्तुतिपादकाः ३ जानकासहितारामोपधयंतिपुनःपुनः पावरोसमशारादुक्तउलदपश्रोमिति ४ विलसद्गौरामेव
सुपतीकेयतस्ततः मर्दनेनतुशय्यायाःकुमुनामोपनःपुनः ५ सुश्रोभयनेरामेतिप्रधानेनअप्रया चैतालिकाऊलुः
मंचनिद्रामहोशनगताराश्रीविश्रान्तिर्न ६ निद्रावसोनेमोरेवल्लयांचेवचिन्तकित्ता सुताजनकराचस्यससीभिःपरि

सत्योऽपु.
२१

२७१

वारिता ७ नीराजनाय भो देव मे गलाभिमुखीतव सुखचंद्रविलोक्य सुचंद्रो गच्छति स्थानतो ८ उन्निषत्सम
हाराजनेत्रपुष्पेन भूषितं नेत्रसाम्यायने रामपद्मानि स्फुटितानि च ९ तारसुदने ज्ञापयन्नेत्रे भ्रमेति च
भ्रमराः कलमानिश्चरं मेनेत्यत्र तत्र च संसीनो पुष्पजालानि वायुना निपतेति च पुष्पैः संनिश्चितो वायुमेव
स्वासे समीहते ११ हिमो भूषणं वीर्यपुपति भौतिके समं श्री हृदयतुना शरीरानां शाश्वतो भौतिके यथा १२
नया वदुः १३ इयं प्राप्य तस्माद्वेति च भानुमान् ता च देवा रुणेनैव तमोनी तं च हृतः १४ युद्धयते पितृया वन्नाया
तिराघवा यथा तावत्तया यथा येनी तं वैरिणा च बलैः शूरैः १५ वीतनिद्रामतंगा सेमनां कथं पतिश्चरती देते पु
येया स्वयं श्वरका राजेति रत्नयः अश्वाः कुर्वन्ति ह्येतुं ह्यार्थं परं देवमग्निं स्नानां पुष्ट्या महाराजो ज्ञायाया
रामनिर्मिताः १६ नमः संपतिशेषानोरस्यः पतिः प्रभो पंचरस्याः मुक्तालेख प्रबोधा यं पश्यति १७ सुतः
वेदि पुत्रैः कुमारैः सत्यं कनिद्रां सदीभवत् कृत्वा चाहिक्रमोणि भूषिता वस्त्रभूषणेः १८ यथा चित्तं तुते स
र्ववार्त्ता रुद्रः पुनः शिविका सुचसीताया च्यवेरा पारये पुत्रः श्री सुडुडिनि दौ भूत्या पणरा पवस्य च म
त्स्यः जने गजाः सर्वे प्रयाता उज्जरीरि २० तेषां पश्चाद्युः सर्वे सैनिका ले प्रहर्षिताः शत्रुं जयेय गजेनाम
राजमानो यथा रविः २१ वेधुना लस्मणेनैव चामरेण सुशोभितः हस्तिघातौ समुद्रसुरामेव च नम्रवती
त् २२ सुमेत उ० इयं पृथ्वी महाराजपन पान्यवती सुभा ज्यैदेव मात्रिको रम्यो देवो यं प्रतिभाति मे २३
अत्रयाश्च भजनाः सर्वधर्मैः सीलाश्च साधवः ज्ञानि ते तुलसे पूर्णगोभूमे न ते येव च २४ सेनाणि सत्यं

श्रीशिव०
२१

णी निफलेः पूर्णश्राशिविनः वायुकोणचमो शांता गतो दशरथस्य च २५ उज्जरी पूर्वतो रम्यानां पातु विविचि
तः नयश्च विविधाः सति पावतीया अघा पहा २६ वना निरमणीयानि फलपुष्पैः युतानि च इत्यं शृण्वन्तं दशरामः
प्रापदित्यो मनोरमा २७ दृष्ट्वा मनोरमं रामः प्रणाममकरोदि मुः बलिन विवेशाया मासन द्या सीर मनोरमा २८
पदेवैरग्निशरज्जेतेन द्या सीर सहस्रसः ससीमाणे स्तरा सीताया तेषां प्रामनोरमा २९ मथ्यतु प्रतिशोरा गोपि
कीडेन सप्तमना रामे रा सह पद्मसी विनहार नरी जले ३० इति भिक्षिच्यमानो तौ पथे चरति मन्त्रेणा सु
शोभनपनाः सत्त्वारा मसीता ते येव च ३१ मथिलानुमं रारा म मत्स्थाने समारं वस्य सुरक्षा सेमगेना ३२
तथेयं मे मनोरमा ३३ स्थाना उडाल कस्येव ज्ञातेषां परमाभुता मत्स्थाने समारं वस्य सुरक्षा सेमगेना ३४
अस्थः स्नानमात्रेण पुण्यं दृष्ट्वा जायते नद्या सीर पुनर्गता वस्त्रान्धा पाश पक् ३५ देहो नो इति भा
भो नृणां ता यथा विपिः सयंतु भुजे रामः सैन्ये सह महामनाः ३६ यामे चतुर्थे के रामः सीतां प्राह स्य पति
व रतच्छालवने रम्यना पुष्पैः रत्नैः ३७ पुष्पावचपने कर्तुं गच्छति पुरासितः मया सा ईदं लमये वससी
भिः पारवारिता ३८ भरतो लस्मणश्च वंशु हारा व वल्लथा गच्छन्तु तौ व हारा पसेः सीरैः समन्विताः ३९
इति श्री सत्योपाख्याने स्तुतौ शौनक संबोदकोन सप्तमि तमोऽध्यायः ४० श्रीराम उ० वने विशोपति सर्वं
हेन सविना तथा सर्वे पलायिताः जीवाः दृक्ता देन सर्वतः ४१ इत्युक्त्वा पुरो रामः प्रस्थितः सीतया सह ते च
सर्वे वने जगुः विस्तरेण यतस्ततः ४२ वडेव कृतवः प्रापुर्विहारा ये तु कानने फलपुष्पैः रत्नैः पुनः स्तर वस्तवनेन

वन् १ ज्येष्ठानासमयं प्राप्य कर्षयस्वमानसं राघवानोपदेवकुर्मगीतास्तुपुरागतः ४ कात्रिन्डी प्रप्रया
तिस्त्रकाश्चिन्नेरप्रगच्छति नूपुराणि च प्रकर्ष्यतीति वादयेतीति च प्रसूता ५ मुखेत्वेद्वययापाताभारेण द्वयं
योदयेः लज्जितामोडवीदेवीमानस्यैव विचार्य ६ रामस्याप्रेकथयपुष्पविचित्रोभियतस्ततः पश्चादशेष
योमरभरेतेन सह भाभिनी ७ लज्जितामभरतेस्यैव चोर्मिलापतिनासह पयोवनोत्तरसाध्वीसखीभिः परिहा
रिताः ८ लज्जितालक्ष्मणस्यैव श्रुतिकीर्तिनोत्तर पतिना च वयस्याभिः जगाम गतगामिनी ९ विविश्रुतेन
सर्वजनानाम्यः सहस्रशः तदानीं शुभगा प्राहरामेराजीवलोचनं १० वीरकोत्सादपतीत्यज्ञानकीमनुगच्छति
रामचन्द्रमहाकाशे प्राशरी प्रगच्छतोत्तरया ११ अनुयातीं प्रियोपश्यहेति नैमिषगच्छतीति तस्याः चासंस्मोकर्ण
रामस्तु स्मृतिमानना १२ बाहुभुजगमोभाभे प्रियाकरे निपाय च जगाम रशयन्तो भावात्ताव १३ विधातदा
१४ वने गता तदा सखा पुष्पाभ्यानीय पलतः मालो कृत्वा तुरामाय प्रदत्ता च रक्षिणी १५ धृत्वा कंठे तदा रा
मो मालो पुष्पमयी शुभो ताभ्यां पृष्ठति मुद्रीति देवता सोमहामनाः १६ विनास्त्रेण मालो नुस्य कृत्वा तु सप
वः सख्ययती प्रियो प्राह पृष्ठतामिति सारं १७ मालो पुष्पमयी रम्या सीता कंठे निपाय च कर्णयोः कर्णे स
ख्यं च रक्षया मासपाणिना १८ स्मयती च तदा प्राहरामे मधुरभाषिणी जानन्नुवाच कर्णौ मे भूषितौ रा नन्
गुणरत्ने सख्येव च १९ तस्यैव भूषितो कर्णौ च शृणाति कथां तव इत्याभाष्य सपेसीता पुष्पाभ्यामनययुता
ता २० जानन्ना मुखे पदस्य गेचमा प्रायवधपरः पुष्पा निनुपरित्यज्य मुद्री नीजानकी प्रति २१ आपतेतं तेन

श्रीशिव-

२२

दृष्ट्वा गुंकरेण भित्तु मुखे विभुं ज्येष्ठोत्तरसा च तदा इदं वराघवे सख्येले वादयेतीति च नूपुराणि पदे स्वेकं राम
स्योके तदा बाला द्वापपात ससंभवा २३ कुचद्वयेन रामस्य हृदये स्पर्शतीवसा कंठे लपान्तमा भित्तमात्रे
खणिवहारी २४ प्रहसन् नृराघवः प्राह प्रियो प्रीतिपरायणं महत्सुखं तया दत्तं सख्यमालिगेन मे २५ सखि
तानानकी देवी वाक्पलुर्भेदं शृण्व तदा नुजानकी देवी पलुर्भेदं गानि सवैशः २६ पुष्पाविभूषयामास सख्यती
सामुल्लोचना मुखे विहरतो धाराघवाणं महात्मनो २७ सुप्रेक्षा लमि र्प्राप्त शिविराय तदा ययुः रामारयः
कुमारो नैसीताया सुवरास्थियः २८ कृत्वा तु पश्चिमं संध्या सख्यायां पदं वेदमनि शयनं भेत्ति रसैव न्यासी
रे मनो रमे २९ मुखेन समागतानी राघवाणं महात्मनो इति श्रीसत्योपाख्याने सूतजीनकसंबादे सुप्रसिद्ध
मोष्यायः ३० सूत उवाच ३१ वादेन उडुभीनोत्तुवा वितासकलाजनाः कृत्वा चान्द्रिकीं प्रतीक्षते चराघवे ३२
राघवो भ्रातृभिः सादृश्वो संध्यामुपास्य वै आरुह्य गजराजेन प्रयातो हिमखस्थलं ३ महत्सासनया सहैसी
तया सह वीर्यवान् तदमनो रमाया सुभूमिभामान् विलोकयन् ३ ततो मप्यान्वेला यामखस्थाने समागतः
समुत्तरीये गता द्रामो निवासमकरोद्वेले ४ तस्मिन्नीर्यसमाख्याता दत्ता दानिभूरिशः वैश्वान्यासिनेनैव
विप्रावै ब्रह्मचारिणः ५ भोजिता परमाले नरक्षिणाश्च पुनर्दो उचिताचार्यै रीतत्र मुत्सजानि च नृगुणैः
प्रातः काले तदा रामो गमनापमनोदपे च बालसेनामहती गजवाजिरथेनैरे ७ त्रिविक्रारावशेषाना राप
काणो मतंगताः दक्षिणादिशि मालो स च प्राता महती चम् ८ गच्छन्तो वरं रम्येदं रोरं पुनायकः पप्रच्छ मेनि

परिपालयमोमानदीसमाशरणगतं शरणंलोप्रपन्नोश्मिकमलेकमलानने ११ अन्वोमेरक्षितानास्तिस्त्वसत्येहरिप्रिय सीतोवाच य
परायणे किंवदूतेनतोसीतेजस्वितेनपुनःपुनः १२ अन्वोमेरक्षितानास्तिस्त्वसत्येहरिप्रिय सीतोवाच य
त्वयोक्तमिदं पुराणं यद्विद्योतिमानवा २० शृण्वन्ति यममहामत्तानि योरास्यामिसेपरा यपदेत्यातहत्यायश्चक्षुम
जिसमन्वितः २१ सुरसैभाम्यसेपल्लोबुद्धिमान्द्विमान्वेत् पुत्रवान्गुणसेपल्लोभोक्तोभोगस्यचमानवा २२
इदंलोचमहापुण्यमहाशरिद्रनाशनं लक्ष्मीप्रासादनननचतुर्वेगफलप्रदं २३ इत्यंबरासुमुनेयेदत्तारामेणसे
युता वनेनिनापरावरीविहारेणमहानिधे २४ प्रातःकालेरमात्री योहालाश्रीसरपूजले सीतयासहपत्न्या
अयोध्यागेतुमुत्सुकाः ब्राह्मणेःकुलद्वंद्वश्चरिष्येभगमिस्तथा वणिग्जनैस्तथयोषीः सैनिकैर्बहुमिसरा आ
रुच्यवाहंतस्वैजयोध्याप्रययुरथैः तदेतदेतस्त्वाश्चरमष्टायमनोदपः तदाप्रभृति लोकेचवाक्कागुप्रहृतिः
स्मृतः इत्येवंचययनरामोगमनायमनोदयो अयोध्याप्राप्यतत्सर्वपापुर्वद्विमानिनागराः राजद्वारेसमाजीम्य
रामोभ्यात्समन्वितः गजादुत्तरीयैराजानं पणाममकरोत्प्रभुः रामबालिगपवाङ्म्यातयापुत्रान्वयोतमः आने
दपरमंप्राप्यदृष्ट्वापुत्रान्त्समागतान् कोशलां च सुमित्रां च कैकेयी च तथापराः प्रणमुक्तेकुमारारश्चपरिषत्ता
श्चमातृभिः प्रणम्यत्सः श्वसुः सीतामगिनीभिर्मृदा न्विताः तामिश्चापिपरिषत्ता वध्यासीत्सुब्रह्मनाः विजङ्कः
पतिनासाई सेस्वेचमनिताःपुनः इमांतुनीयेयाचोबे रामस्परमात्मनः यः शृणोति सदाभन्ताकथयद्विप्रभ
कितः तीर्थयात्राफलं तस्यनापतेनात्रसेशयः इति श्रीसत्यापाम्यानेस्तुतुलोकसंवादोचिसप्ततितमोऽध्यायः

श्रीशिबो

२५

७३ शौनक उ० विहारंरामचंद्रस्यद्विष्टोस्तुतमेषियः यस्यश्ववरागात्रेणमनोयानितुनकुचचित् १ स्तुत
उ० शृणुविप्रमहाभागरामचंद्रकथामिमां अशोकवनिकोरस्योरापवःसीतायासह २ प्राविशविहारय
तस्याश्वबनिनोदभाक् सखीसहस्रसेयुक्तानानकीजनकात्मना १ रमयामासरासेसानाभाभैर्यमनोह
रे द्विजाकीर्त्त्योचशीलेनमर्तुःसीतारहस्यमः ४ अशोकवाटिकायोतुविजहारदहन्तु २ रमयासीत
यासाकरामचंद्रोमहामनाः ५ सकराजानकीदेशीमालोपुष्यमनोवर्धनं न्यदधेरामकंदेतुस्यान्नानेतु
दरदोह ६ आत्मनःप्रतिविबेतुनात्ममोहकरंवरं कीलुर्भोरामचंद्रस्यकंदरेशमनोहरे ७ मानेचकार
दरदोह ८ आत्मनःप्रतिविबेतुनात्ममोहकरंवरं कीलुर्भोरामचंद्रस्यकंदरेशमनोहरे ९ मानेचकार
साबालाद्वितीयाउल्लिखिकया एकपत्नीव्रतौकामोदुतीयोतुविभर्त्येसी ६ इतिमलानगामाद्यमुष्णामु
भगयासह अन्वाअपितरज्जुमुःसीतासख्यःसहस्रशः ६ कुंतोतरेस्थितासीतोशोचतेतोतामवस्थितो
परिवायेतदातस्युःसर्वोश्चितापरायणाः ६ किमियमानंमापल्लाकुष्येयंकोपितासती इतिशोचंतिताःस
तोःपरिवार्यसमंततः ११ बीजयंतुतथाधन्यान्मारेणमुशोऽभिना बीटकंतुकरेश्चतस्युश्चोत्पराय
णाः १२ काचित्गुपेपह्लावकावित्तिदूरसंपुराः कर्त्तुं इदंश्रीहलाश्रकाविककतिककरा १३ भंगार
चापराशुस्तस्युश्चापं पतद्गृहे सतस्मिन्नेरकावित्ताखीकेशप्रसाधिष्ठा १४ वेण्योपुष्पानिकंतुसा
जानकांप्रीतिसंयुताः अयोध्याजिनेयोःसातुनिषिद्धातत्रसीतया १५ नचरतरदावेण्योपुष्पाणिमुरभी
निच तत्रचमुभगावालीमुवाचैमथिलीप्रति १६ कृतातुप्रानलिमुभूवचनेप्रीतिसंयुता सुभगोवाच

सत्या-३-
२६

निषर्द्धकृतपेकयादासीं केशप्रसाधिकां १७ कोतेभोतिःसमुपन्नामशुद्धिसुलोचने श्रीजानसुवाच
मुभगेलाप्रवस्थापि स्मृताभ्योनिर्मनोहरां १८ जहंपत्युप्रकुलीणाभालोकंरमेनोहरां पत्युकरंरमेणोह
रासुंदरीरव्यभूषण २० हायभावेप्रकुलीणासादरीकतलोचना संदेहोमानसजातोरापनोयोविभक्ति
किं २० मनसाभ्योतिर्युक्तंनस्थिताकुंनेपतिविना कैरणातेनमेरुशसरीकेशप्रसाधिका २१ श्रुताया
कंपनुसीतायाःजहासमुभगासती नेतिनेतीतिधुनानाशिरूपाणिनुचात्मनः २२ उवाचसस्मितोसी
तामावृद्धिदरीशोकंय लक्ष्म्ययुक्तंपरेलोकेचिरतायाःसुलोचने २३ नाथेनममनुषात्तेयाचितस्तुप
तिमेया नप्रस्थाभिप्रेतायोमेकपत्नीव्रतेपति २४ विराट्यवचनेनतुकथमेवप्रभाषसे यादरीको
स्तुभोदृष्टानारीपेकजलोचना २५ तादरीपश्यचादरीह्यात्ममूर्तिःसुलोचने इत्युक्तादरीयामासमुकु
रंनितपाणिना २६ दृष्टासीतात्मनोरुपेतादरीसुमनोहरं जहासस्थितात्मनोगीवात्मानंगर्हंतीमुकु
२७ आर्व्यज्ञानाकृतंस्तुतमयापत्युश्रगहेण आत्मककिलरोषेणवात्मानंदिश्याम्यहं २८ पत्युर्विरंता
कोडोगममिथ्यामिनेसेशयः स्तुतुः २९ विमलानामकाचिनुसरवीरामस्यपीमता २९ व्यथितोजानकीह
स्फारामगागत्याब्रवीत् विमलोवाच किंरोषिमहाराजपश्यसीतांवराननो ३० विषोदितसत्वा
नोतुमप्येदंइदमजानो श्रुतासुमनचनेतस्यागमोदमयतावर ३१ विषादमगमदीरुःश्रुतोदेवीविषोद
तो आत्मानाच्छीघ्रमुत्थायसरवीरमपरिवारितः ३३ गजराजगतिवीरःपश्यामेवचचालह विचारमन

६ श्रीशिव-
२६

साकुर्वन्निश्चयंनानिजम्बिवान् ३३ आयातेतुपतिदृष्टासीतासुरसुतेपमा प्रत्युज्जगामसावालाहियासुवन
तासता ३४ कोशिकंरपेलावस्वयिलोकसुमुंदरं पति गीपर्वराजप्रतिमदृष्टामुदमपपता ३५ प्रणाममकरोत्ये
न्नाशेवाचवचनेतिदं आत्मज्ञानमहाराजइतिताहंलपाणिना ३६ जीवपर्मंगतावाहंमानंहुत्वावधिप्रिधी
सकपत्नीव्रतेराजन्त्याभ्योतिस्तुमपाकृता ३७ तथाइत्यमनुश्राप्ताणोरोतेचश्रापाम्यहं स्तुतुः सुवेगिरंत्वेतेनो
सीतोचंद्रनिभाननो ३८ आलिंग्यतांवाचाइत्योपेतावाचवचनेप्रिया श्रीरामः ३८ नचभ्योतिंनमोपेनोपिपेपिपतेर
मपि ३९ सेरेवदृश्येसासेकोषिविबंमुलोचने स्वमुक्तामहाकाःसीतापीनपयोपरो ४० रोम्यवसस्थलेहुत्वा
शूलिर्नग्नपिथानिजो पाणिनापाणिमारुप द्वाजगामनिजासने ४१ सीतायासहृवासीनपीडेप्रमाणविवर्तितं तत्र
निस्तस्यस्ताःसर्वालोभिरंपरंमुरं ४२ राघवेणसमातताःचत्येचकुर्मनोहरं मुंदंरादयामासकाचिरमममुंद
रो ४३ वार्येत्योपरांवीणाकोशपचापंतयापराः वंशिकातानपूरीश्रपणवैभुमुरंतेमु ४४ मायैत्योभिनयंच
कूरायस्थापेमनोहराः नानावेषधरास्तासुचृत्यमानाःकलेनयुः ४५ रामचरमयामासुर्महिषीराघवस्यच
शोभेययुःपुनःसर्वोकींशंचकुर्मनोहरां ४६ रामोरमयतोश्चैवोरमयामासमुंदरी हावभावेस्वकीयेस्तुता
सोजग्राहमानसे ४७ भोजयामासताःसर्वोर्जनेनानाविधेरेसेः कीडितासुचिरंतत्रसीतयासहवीर्यवान्
४८ अजिनायपुनःसर्वोस्वकीयराजसमृद्धिं हरंतुचरितंरम्यंरामस्यपरमात्मनः ४९ श्रोतम्यंरसिकैःसर्व
सेवकैःप्रातिपूकैः श्रुतापापानिनश्येतिरामेभक्तिःप्रजायते ५० येवोतेषानरातम्योगोपनीयेप्रपन्नतः

वाहि
मि

अश्वतेचवक्त्रव्यरामभक्त्ययज्ञेनक ५३ ॥ इति श्रीसत्योपाख्यानेसूतशौनकसंवादेवतुसप्ततितमो
 व्यासः ॥ ७४ ॥ सूत उ० एकदापर्वतेरमेनाम्नाशेषाचलाभिषे सीतया मृदासाकंजगामरपुनायकः १
 कृत्वापुनर्वैतेरस्यासमीपेयस्यतिलोतमा पूर्वभागेव पीठं तुनाम्नाविधाभिषे महेन्द्र २ रक्षिणो वृक्षेति स्युर्दं
 यत्र मनोहरं निवासोपचशेषस्यतस्याच्छेषाचलोमहेन्द्र ३ रामसुसीतयासादेविजहारससी गेयोः ससी
 भिः सहितापत्यापी स्वात्मवशेनच ४ मयुराः कोकिलायत्रचातकाः पक्षिणोपरे कूर्ततिशतसत्सत्त्वमंदका
 श्रपुनः पुनः ५ समाकर्षय गिरलोयापरादृष्टामनोहराः ओरोलनापरासस्यसीतावचमनोहरा ६ रत्नैः
 सुरचितोस्तोभोरत्नवैरपुम्पहतो सुरलक्षिरसीतोचतमोरोलविधापुत्र ७ सख्यानिवेशायामासुरामचंद्र
 मनोहरं तस्यैवाकं तथासीतोत्तलज्जयासुमितातनो ८ रामचंद्रपनश्यामेसीतोविद्युत्त्वतोपमं ओरोल
 येति सख्यस्तु प्रेक्षा पुष्पशनेशनेः ९ रागहिरोलकं नाम मल्लारं चकलेजगुः काञ्चिन्त्येति रामा प्रेराहयं
 त्यास्तथापराः १० चामराणि प्रकुबोणारसीन्कूर्पतिचापराः नागवल्लीरत्नैर्हयैर्युगीफलसमन्वित ११ रा
 मचंद्रायसीतायैरदं त्यस्ताविजहिरं जलसौगंधिकं स्नासुवष्टपुश्रतयोमेरा १२ ओलैरुजतस्तौ च सीता
 रामो मनोहरो रत्नवस्त्रपरीधानो नानारत्नैश्च भूषितो १३ श्रीप्रेचारोलेनेयातेभीतेवजनकायना सख्ये
 कंठमालियुभतोरं मुद्रमापसा १४ उवाच सास्मयंती सामाशी प्रुष्टयतामिदं तदाराः प्रसन्नानामपि यो
 चंद्रनिभाननो १५ सृष्ट्वाकनकवर्णो गीत्स्वचकलेस्मिन्निवरे पीनो जतपयोपरा कृत्वा वसत्यले रामः आ



श्रीशिवः
२७

रोलमुस्वमन्वभूत १६ सीतोमंरसुंगंधाश्रयायवसोशिखेविरं जलविंदकं र्णनेपः पक्षीरंतिशरप्रभं १७ दे
 वाः पुष्पा निवर्षंति ससीतेरापर्वे प्रति ओरोलनविमानानुपीनीयेसीतायासह १८ ओरोलनसुखं कृत्वा ससी
 भिः सीतयासह पाउरुं च समारुद्रप्रियापाणि परस्मृ १९ पश्या मेवमहाराज प्रचचालनिकतनं रामेष्ठया
 तरावधौवभुवमहेतीपथि २० जलमितास्तथावालाकोमुभवस्त्रपाभिकाः २१ ओतेतिजलविंदुश्चाशीयोते
 त्थालोकः २२ देहलपानिवरक्षाणिजलकिल्बानिरेजिरेअपस्तस्युश्चष्टहाणंरमस्योपत्रतत्रच २३ रामो
 प्यसीतयासादेतयातस्योत्सपन्नवि सीतामाराय रामस्तुतोत्तररीयणऊदतो २४ सुरंगसाटिकावालो प्र
 योतीहेमिनीमिव गजराजगतिवीरोत्सयंकंशुभकचूर्वः २५ तस्य सुतोचचसस्यछायाभाश्रयदेपती
 जलजिन्नेपतिं देहलसौरीशोतननयुखं २६ मानेयंति सति पाहमयाश्रुकोपोलोकै कंडुलेरचयामसपा
 णिनाचतयालकान् २७ सस्मितारामचंद्रस्यमुकुटं प्रसीतीमुकुः गंधर्वराजप्रतिममयोः पश्यतोमुकुः २८
 रामोपिकंपुकेनेवप्रियायावरनावुजं पश्यतीनां सखीनोतुममानेप्रहसन्निव २९ ओतेतीजलविंदुश्च
 पणो प्रियायासुखमोगमः पश्यन्नेवमुकुं मुकुः ३० वृशमणिं तथारिव्यनासायोमोक्तं तथा वणोयाक
 णेपुष्पाणि रचयामासपाणिना ३१ जहसुसुलरासख्यस्तयोः श्रीतोबिलोत्सव परस्परजुवैस्वश्रुवैस्वश्रुप
 रस्पर ३२ हं पश्येनवलोकं स्मिन्निवर्षतेनेवलभ्यते अलौकिकं तैरेपस्यं विधाते रामसीतयोः ३३ शतस्मि

सु

नैवेचनन्याप्रतिपत्तारथाः पञ्चदशनेकशः प्राप्ताप्रणिपत्यतुरापव ३४ रथेष्वासीजयामासुः सर्वोत्ताश्र
वराननाः ससीतारापवस्थाप्यरथमणिविचित्रिने ३५ आनित्युत्तेनपासदैनानारत्नविचित्रिते आधाय
शुभवस्त्राणि सरोरुः पुनस्तदा ३६ एतनुचरितरस्यसीतारापवथोभूमि नवद्वयस्यकस्यापि श्रेष्ठेगेप्ये
मनोहर ३७ प्रेम्नावेश्णुनेपसुतमेवप्रादिवसणः इति श्रीसत्योपाख्याने सूरशेनकसरोरुपवसप्तति
मोध्यायः ३४ सूतउ० एकदाकान्तिके मासेरीयमानाचरापवः तुलस्याः पूजनलोके स्थापयामास प्रमतः १
पूतकीराचकारासुसीतयाप्रियया सह जितसद्यस्तदाराभः प्राहवाक्यमनोहर २ श्रीरामउ० तयाजितोह
देवशिकिकरोमितवाधुना यत्तच्छेदसिदास्थाभितद्वराभिनसेशायः ३ सूतउ० इति वाक्यसमाकर्ण्येपयुः
सामुद्रलोचना उवाच चचनेन सातुभूपांगेऽप्यपतीपति ४ जानकुवाच यदिरातुतवेलासिमानसेरेहमेधि
य यथा मेमानसंराजन्तदाहत्तरदुःप्रभोः ५ आलिंगनं करिष्यामि वाद्योपास्थाभितोत्रयो इति श्रुत्वा च
चक्षुःस्थारामोराणीवल्लोचनः रदंशरीरं तदेविययच्छितयाकुरु मादमालिंगनं भद्रं तुभ्यं दस्यरहः प्रप ७
पुनर्पूतं तथा च केजितारामेण जानकी ज्ञानकुवाच जिताहं लोकोदीर्घरतुभ्यं दास्यामि किवर ८ मन्त्रवृद्धि
हारजतयमाकीचयेतधुना दासीहेतुसदास्थाभितसेवकीतेपराजयोः ९ तुभ्यं किं किं नरास्याभिमानसुतुसम
पितं आज्ञाकारी सरारानन्विधेयो मां मेधेहिले १० प्रिया वाक्यसमाकर्ण्य रामः प्राह वरानना स्वमेव सरोरु
विक्रमेयं च लयामपि ११ सूतउ० अस्मिन्कुटीरं न कृत्वा प्रियया सह रापवः आह श्रुतिविकारा मन्तीर्थपुन

श्रीशिवः

२८

स्ते

हर्षयुगे १९ कान्तिकेतीर्थराजोपि स्तुताया तु नित्यशः कान्तिके प्राप्य नर्त्तनितो यो निसलिलान्यपि १३
देवपुनरहरिदृष्टा पापेन प्रपतितस्त्राणान् तस्मिन् संश्रमे हारिष्ये सीतया च सखीभोगे १४ उवाच सत्त्वधर्मोत्तम
न्यवासि कीर्षया जयोभावाभिनः सर्वे नारायणीस्तुभूरिशः १५ रामदशैकनामार्थयात्रया रदं मे बहि १
पौणेमास्या तदा स्नात्वा दानानि भूरिशः स्वगेदारे पुनः प्राप्य स्नानं कृत्वा तु सीतया तदासीतारंदोदानं सखीभिः
परिवारिता सदा रपूजिताः विप्राता नावन्विष्टा भूषणे भोजिताः परमान्द्ररक्षिणा च रंदो मुद्रा रामोपि विप्र
धेर रंदोदानं पुनः पुनः आश्वाजात्रयाश्चैव भूमिश्च शिविकालया रामेण भूरिशो दत्ताया च केभ्यश्च सी
तया विधाय चालितारामो द्राष्टुणा निदुमन्नवीन् श्रीरामउ० यूयं विहनु सख्याश्च जस्माकं चैव पूजनात् २२
प्रीयते लोकनाथस्तु रमाकांतो न संशयः युष्माकं पूजनं ये तु करिष्यति महोत्तले २३ रामिव्यति परलोको भुक्ता
भोगास्तुभूरिशः सूतउ० वास्तव्येदीप्यते विप्राः रापवस्य तथा विधं २४ ऊचुः प्रोक्तयो भूता दत्तात्राणि पमु
तमे विप्रउ० भवान्ना रायणे देवः सीताल्लक्ष्मीन संशयः २५ श्रेयसे सर्वलोका नाम वतीणे स्तमापया युवयोः
पूजनं ये तु ध्याने वैकीर्तेने तथा २६ करिष्यति रामिव्यति परलोको परनराः कीर्तिवैपावनी लोके भरतो देर पूतमः
२७ तदाराभ प्रसन्नास्मासीतया सह कीर्षयान् पश्यतां सर्वलोका नो प्रणम्य दित पुगवान् २८ आस्थाप्य शिवि
कोरामः सीतापि शिविकोत्सकां विवेश भवनं रम्यं मांगे सर्वैरलंकृतं २९ इति श्रीसत्योपाख्याने सूरशेनकस
रोरुपवसप्ततिमोध्यायः ३५ सूतउ० सर्ववैपाङ्गणे मासे रापवसीतया सह चकार विविधो श्रीरामो नृणां च

सुखप्रदो १ चरिता निचभूरी शिरामस्य परमात्मनः नशक्नोते मया वक्तुमपि न शक्नोते रपि २ शेनकः ३ ब्रह्म
तमराभाङ्गफाङ्गकुलममोपदि फाल्गुना चक्रपराभाविते स्तीतपासह १ जानकी फाल्गुना मासि सखी स
वो जगदादय अयं वै फाल्गुना मासो हेलिक का चक्रियतां मुरा ४ हेलिक का कर्तुं मुसुका चेदे हावचनेन तमु मायेतो
ननेन वक्रः फाङ्गकुलामनो हरो ५ हावभावे प्रसीरण सुसीता राघवयोः पुरा चिकी दुर्विचो फाङ्गुताये हो सपाथ
चोगनाः अरुणो सोदभारा पविकरं त्यपरस्परं दन्तिभिः सिच्यमानं स्तुगमेशा पिवराननाः ७ सीता कनकश्रेण
राघवे शिष्यते मुद्रा रंगकुंडे उरामेज्ज सवरत्ना स्थापिता मुद्रा ८ रामे चापि समासी प्रसप्तो रंगकुंडे, पातयित्वा
स्वये सीता चिकी दुर्विचो पतिना सद्गु लुण्ठणं कर्तुं को रामः उन्नीयेण सहो भयत औदवना तुरेश्वरवर्हि निर्गम्यत स्थि
वान् तदा सखी भिराजि सन्तु रंके समंततः कज्जलनेत्र पुष्पमवकतु को भाउ पस्थिताः ११ निरनेत्र नेत्रमेनामंज
नेतु ज्जम विद्यति चिचाये प्रमनसो सुवंगमना पुमनो रधे १२ अंजनेन हनेनैव मथरा वरनेन मया कर्तव्यं कलुक्के
के ह्युत्पापकिल योषितां १३ तदा पलायिता रामः प्रहसन् पद्मरतः जानकी प्रेरया मास ह्युपगमिष्य सखी गणं १४
स्वये नगमा सत्वात्ता वेगेनापि सखी गणैः अपावशमर्चं द्रविकै के पीसरने प्रति १५ पुत्रावभूतं के कपी मरिरेर
पुनयायकः प्रेक्षा गुणापे के कपी रामे शक्तिमानने १६ आगता यानु सीता यो सखी नो च गोषः सह मेथरा कथ
या मासता भ्यो रामं वगोपिते १७ अत्रैव भवने रामो गुप्ता भूत्वा हितते तदा तु के कपी रात्री रुपाय मे मथरा प्रति
१८ स्वयं निर्मलस्या मास मथरा वैवस्विका उवाच सुस्मिता सीतो स्वयं रेवी तु के कपी १९ रोगा न की यतामस्याः

श्रीशिव

२९

ब

सीते कर्मलोचने वरखाणि वक्रमूला निक्षिप्त्वा नि कर्तुं मह्यं स्रुतः इति श्रुत्वा वचसः स्था सीता या श्रवसखी गणैः
गेनो नाविषे तो लुक्त्वा पयो वर्जिते मुरा २१ कज्जलं यं तु रामस्येन श्रेकर्तुं समुपयताः तनुतस्याः कपोल तु वक्रः सखीः
सखी गणाः २२ सुभागादेशो यामास मुकुटं तनेनी गते ह्वातु वरं न स्वस्य मेथरा लज्जिता मवत २३ पलायनपराया
तामुत्ता निक्षिप्तं मरिरे सतस्मिन्नेतरं रामके के पीभवा त्र्यधुः २४ निगेल्स स्रुता सत्य सजनाः भवने येषा कपोम
नो सिसवो नो मुष्मिने न रमापतिः २४ केनु का ह्वातु री पाञ्च सारतं विद्वंश्वरं गान् पयं के जननी ह्वातु तस्या श्वे के पा
तह २५ प्रहसन्नेत्रं अंजनेन विचये वं वरवालकाः माता तु वरनेन स्या मा जेती स्वेन पाणिना २७ दहरो जानकी प्रासास
खी निक्षिप्तं सखी गणैः श्वश्रू ह्वातु तदा सीता नो वाचा वा ह्वातु खी ह्वा २८ बभूव चाशिता यो गो निवायं तु सखी गणं तनु
कनकश्रेणं व सुभागाये प्रकापयन् २९ सीता श्वसुवाचा यश्वपतो रं विमेवक पुनस्तु री यो मार्गैः क्षिप्त्वा कलप
लायितः ३० इदानीं तव बांके तु सा धुवनु विराजते शिरोमं के नु की श्रं गेर्वस्वाणि व मुकुटं ३१ तथा मदीयाय
स्या श्वरं कर्तुं गौनं रंजिताः इति वाच्यं तदा तस्या श्रुत्वा वैवंजमादय ३२ कोशल्या वाच सापालं भवन् रं व भवक
व्यं ममा प्रश्नः भवती नो भया ईशो रामं के वचसागतः ३३ अयं वै फाल्गुना मासः की श्वे वता येन सुकुः गृह्यती
पूजने सीते मनुयातु पद्येसिते ३४ इत्युक्त्वा वक्रः कवस्वाणि रंजानि भूषणानि च कोशल्या प्रहसन्ता य पुन
प्रीत्यै क्षिप्ता नना ३५ तदा तु जानकी देवी रामं पाणिं तम प्रहरीत् रामं बक मल पञ्चासी वचने वै मधुरवीत् ३६ गम्य
तां प्रपन्नं वैव मरिरे प्रिया सह तदारामः समुत्थाय मात्राज्ञो येषो मुरा ३७ प्रहसन् प्रिया साकं सखीभिः

परीवारिताः विनष्टतत्रकागस्यारामोरमयतोवरः ३८ इत्येतुसुतरोरामचिकीर्तेजिनज्वस्मिन् इरंतुचरितं
 व्युत्पन्नप्रकीर्तितं ३९ यस्मैकस्मिन्नातयोगोपनीयेप्रपलतः श्रुतानसहतेयसुरामेतिदियोनरः नश्चावेय
 कदाचित्तुतस्मैदृष्टाययाचकः पुलकैरदृशेनेवत्रयाच्छ्रद्धावतेत्ययं ४१ ॥ इति श्रीसंज्ञापाख्यानसूत्रो
 नसंबादेसतत्त्वप्रतिमोधायाः ॥ ३० ॥ सतु ३० ॥ ॥ ज्येष्ठमासेसितेपक्षेदशमीयातिथिमेवेत् दशहराचसो
 यादृशयापानिहेतिया १ श्रीश्रीनामकृतश्रयतस्मिन्नामोदर्यो विहारपसरयाश्रजलेपोतनसीतया २
 गच्छतिमयासाईसखीभिःपरिवारिता विहारंतुकरिष्यामिसरयाः निमेषेजले ३ इत्युक्ताराधनः प्रीत्यानना
 नाज्ञापयनरा स्थाप्यतोसरपूनीरेप्रतिग्रीरासुभूरुः ४ आक्षपारामचंद्रस्यनिरस्करंलुक्पितायाः त्रिभि
 कोनुतरारुसूतीनयाचसखीगणैः ५ गच्छन्द्दशरोमोयसतंचिवसखीगणान् शाटीप्रांतंतुमुक्तानामालया
 चविनिर्मिताः ६ उत्तरीपतयातासांजानकांश्रेवज्ञेभिते निश्चासरातारह्यं चदशरोपधिराचकः ७ शीर्षकानि
 श्वरेभक्तुनीचैसापानेतापयो शोभंततत्रपञ्चानिकलेनार्ताहृत्सलतः ८ नितंबद्वयसंज्ञातंज्येष्ठमासिमुशोभने
 मास्त्रिकानोचपुष्पेपुष्पकंदलेपुयतस्ततः ९ भ्रमरोगायमानोहितत्रतत्रपदधूर्तिं गणानामिवपुष्पांकोकवनया
 तियतस्ततः १० प्रयानीनांचबालानांमुनेस्तेरावभूवद् शिरोस्त्रीधंश्रुभंतंनगंडेलपिनचापततः ११ कर्णादि
 पच्युततासांभयंरोमोयलोकपद्मौभिःशाकंमहाराजोजगामसरपूनी १२ अप्सरोभिषुयादेवो मंदोकि
 नाभिवरंरगद १३ सुवैरदशभागेसरपूचराजते १४ कर्मिभिरत्नसापानैःहंसपुष्पैःमुशोभने सीता

वाही

शिव०

३०

ग्री

श्रवस्यरामस्यवनिताभिपुतस्यच १० तस्यालीर्षेविहर्तुंचमानसेवभूवद् उत्तरीपेशिकाभ्यांलुगरामसंज्ञासखी
 गणैः १५ सोपानेपुरंदरप्रीननुपुरैरुसैकेयुताव तपोरावेनंतंसाभिर्विश्रान्तसूतांभवन् १६ सोपानेभ्यस्तदाम
 योस्त्रियैरुजलेविष्णु सरयाश्रजलेयुदतिमिनकेविर्जितैः १७ रामस्यबाधयाकृशजानसुवेषापीवैर नारी
 नितंबद्वयसंज्ञेनया १८ भूवद् १९ पोतस्थितस्तदरामः पार्श्वेय्यैश्र्यानाली उपजाचामरोतोनुभाधेराधवप्रि
 या २० श्रीरामउ० पश्यसीतेप्रकुर्वेतिशेषनेचसखीगणैः आसांवेगारागोणराजतेसरयुनरी २० आसांभदंतं
 पोतंजलेनतुपुनः पुनः तर्जनेतुर्नेकेभिर्वोरिणाप्रिपतेमुकुः २१ जलरोगंतुर्कृतिययनेपुसखीगणाः पंकजानी
 वराजतेनेत्रानिविकवानिव २२ पयोपरशुरुत्नाञ्जनिनेवश्यचंगोरयाद् जलेःसेकानननैवकेपूरैवेदुताकृभिः ले
 शोजनरंलवैतस्मजप्रोतवसखीननाः अवतेशीः शिरोवालो शिरोभ्यःपतितानले २३ निष्कमायाःप्रबोहंतुयातिप
 रिप्रवतांहितं मुक्ताभूमिंयदंभमुयोधितोस्तनमेडले २४ मालेवराजतेतंतुमुक्तानामिवांनितताः जलावतेस्तनाभि
 लुकुर्वैतेचक्रकायका २५ विलाशित्यस्तुस्मिन्लुप्योशोभां प्रपदिरे तारिष्यतिप्रयंस्त्रिस्त्रिहोशोतावरोगनाः २६
 मृदंगजलवाद्यंतुर्कोशासमनोहर् कोशेयंरजवस्त्रेतुजलौहंय राजते २७ नितंबेष्ठवलांनुवदंरसनयाचपा
 नं जलसेगाञ्जवत्स्यमंतंल्योभनमवच २८ सखीभिवरेनेशिकाः अलकाःययुरादंते योतिःतिलविदंयुक्कपोतोप
 रिलेखिताः २९ आसोवैश्वीविराजतेतंलेनेविपूजितः नागेश्वरविशोभनेष्टभोगयतस्ततः ३० जलाशोअधिरो
 भाताःभेनुःसर्वोवरोगनाः स्तुतः ३१ साविहारोसंज्ञस्यस्पर्धामासाजानकी ३२ सीतयाप्रायितोरोमोमौबिमानु
 यासह जलेवतीयेरामाभीरंमरोमोमोरमः स्तंघेविलोकमानस्तुयथारस्यामनोभवः यथावन्योगेनैरुमुगतीभि

सत्योन्म०

३३

देवहि ३९ साधुगोविप्रभूमिस्थंभ्यः श्रीशोदिशतुमंगलं ॥ ॥ इति श्रीसत्योपाख्याने सतशौनकसंवादे बाल
चरित्रे एकोहनासीतितमोऽध्यायः ॥ ७९ समाप्तोऽयं सत्योपाख्यान उग्रराजः ॥ शुभं मंगलं ददातु संवत् १८८५
भाद्रमासि शुभे कृष्णपक्षे ४ चतुर्थ्या गुरुवासरे समाप्तमंगमङ्गलराजः ॥ श्रीरामचंद्रार्पणमस्तु श्रीरस्तु



श्रीशिव

